# तृतीय अध्याय

## अमरकांत के कथा साहित्य में मध्यवर्गीय स्वरूप एवं विश्लेषण

## 3 . 1 प्रस्तावना

अमरकांत के कथा साहित्य में मध्यवर्गीय स्वरूप के जिस चित्रण को हम पाते हैं वह पूरी तरह से मध्यवर्गीय समाज के ताने-बाने को सामने लाता है। इनका कथा साहित्य कस्बाई तथा गँवई जिन्दगी को ज्यादा प्रश्रय देता है। अमरकांत ने मध्यवर्गीय समाज के उस हिस्से को ही अपने कथा साहित्य में स्थान दिया है जो इस समाज के पाखंड, कूपमंडूकता, रूढ़िग्रस्तता तथा अंधविश्वास को सामने लाने में मदद करता है। इनके कथा साहित्य के मध्यवर्ग को समझने के लिये मध्यवर्गीय जीवन की अवधारणा को विभिन्न खण्डों में विभाजित करते हुए विश्लेषित करना उचित प्रतीत होता है।

## 3 . 2 मध्यवर्गीय जीवन का सामाजिक पक्ष

मध्यवर्ग सामाजिक प्रतिष्ठा को ही अपनी सम्पत्ति समझता है और उसकी रक्षा के लिये हर संभव कोशिश करता है। 'सूखापत्ता' में अमरकांत ने कृष्णकांत के पिता द्वारा सामाजिक प्रतिष्ठा के सवाल को बार-बार उठाया है। कृष्णकांत को जब पुलिस पकड़ने आती है तब वह इस बात की चिन्ता नहीं करते हैं कि उनके बेटे को पुलिश पकड़कर जेल ले जा रही है। उस समय के मध्यवर्गीय समाज के लिये यह बड़ी इज्जत की बात थी कि उसका लड़का क्रांतिकारी बने तथा देश को स्वतंत्र कराने के लिये कुछ करे। अत: वे वहाँ गर्व से घर की औरतों को कहते हैं "क्या शोर मचा रखा है? कोई गमी हुई है कि इस तरह से रो रही हो तुम लोग? लड़का है, रोना-धोना बंद करो। उठो बेटा, हाथ-मुँह धो लो और कपड़े बदल लो"[1] लेकिन वही जब यह सुनते हैं कि उनका बेटा अपनी जाति के बाहर की लड़की से विवाह करना चाहता है चाहे वह लड़की उनके मित्र की बिटिया ही क्यों न हो तब उनको समाज में मुँह दिखाने की चिन्ता सताने लगती है वह कहते हैं "अच्छे लड़के मिले हो। तुम्हारी वजह से तुम्हारे बाप का नाम पूरा उजागर हो रहा है। तुमको पाल-पोसकर बड़ा किया गया, तुम ऐसा न करोगे तो कौन करेगा? उम्मीद तो यही थी कि पढ़-लिखकर आदमी बनोगे, पर तुम्हारी रहन बनती जा रही है। बेटा, अब बाकी यही रह गया है कि छुरा लाओ और अपने माँ-बाप के गले को रेत डालो।"[2] इस तरह की बातें समाज में आसानी से देखी जा सकती है। समाज इस मामले में इतना क्रूर है कि कभी-कभी मान-मर्यादाओं के लिये अनेक तरह के फतवों को भी जारी करता रहता है। शातिर दिमाग के लोग मध्यवर्गीय समाज के इस कमजोरी का भरपूर फायदा उठाने से नहीं हिचकते। इस तथ्य को रचनाकार ने 'सुन्नर पांडे की पतोह' में राजलक्ष्मी के मौसा द्वारा किये गये करतब से उजागर किया है। महेश्वर पांडेय द्वारा किये गये हैवानियत के बारे में सोचते हुए पचकौड़ी तिवारी ने गुस्सा तथा अपने घर की इज्जत के बारे में दुख प्रकट करते हुए उन्होंने कहा "मुझे दुख इस बात का है माई कि इस पर कितना विश्वास करता था, रिश्तेदार नहीं भाई इसको मानता था, इसकी इज्जत करता था, यह सब घोलकर पी गया।"[3] मध्यवर्गीय समाज का व्यक्ति अपने घर की इज्जत के लिये सब कुछ करने को तैयार रहता है। इस वर्ग में खाने के लिये रूपया भले ही न हो, ठीक से खाने-पीने में लचर हो परन्तु सामाजिक अकड़ में कभी पीछे नहीं रहता। इस अकड़ के कारण मध्यवर्गीय समाज का भविष्य प्राय: अधर में लटका हुआ प्रतीत होता है। यह भी देखने को मिलता है कि मध्यवर्गीय समाज की शादी इस वर्ग के परिवार को बहुत वर्ष पीछे ढकेल देती है। पूरा परिवार दिखावटी प्रतिष्ठा के चक्कर में फँसकर अपना जीवन नारकीय बना लेता है। प्रेमचंद अथवा उनके परवर्ती उपन्यासों में झूठी प्रतिष्ठा बनाये रखने वालों की ख्वाहिश के कारण समाज में व्याप्त भयानक ऋणग्रस्तता का चित्रण है।

### 3.2.1 मिथ्या दंभ

अमरकांत ने 'आकाश पक्षी' में यह प्रस्तुत किया है कि किस तरह मध्यवर्गीय समाज का व्यक्ति अपने आपमें पूरी तरह से निष्क्रिय होने के बाद भी घर-परिवार पर अपना धौस जमाने में कोई कसर बाकी नहीं रखता। 'आकाश पक्षी' के बड़े सरकार की जब जमींदारी खत्म हो जाती है तब भी वे अपने आपको राजा साहब कहलवाना पसन्द करते हैं। मध्यवर्गीय समाज का व्यक्ति किस तरह उस समय ज्यादा स्वप्न जीवी हो जाता है जब उसकी नैया डूबने वाली होती है। बड़े सरकार की नैया डूबने वाली नहीं होती बल्कि उनकी नैया तो पूरी तरह से डूब चुकी होती है। इसके बावजूद उनको पूरा भरोसा रहता है कि एक दिन अवश्य आयेगा जब उनका राजत्व फिर से भारत सरकार उनसे गिड़गिड़ाते हुये उनके कदमों में डाल देगी। उस समय वे उन लोगों से गिन-गिन कर बदला लेंगे जो आज उनका निरादर कर रहे हैं इन लोगों के लिये आजादी किसी खुशी का प्रतीक न होकर मात्र विवशता थी। ऐसे लोग समाज के लिए कोढ़ से ज्यादा और कुछ नहीं हो सकते हैं। यह वर्ग मध्यवर्गीय समाज के लिये कोढ़ से ज्यादा और कुछ नहीं हो सकता। इस वर्ग ने जहाँ देश को आजाद कराने के लिये बड़ी से बड़ी कुर्बानियाँ दीं, अपने खून पसीने को एक किया वहीं समाज के इस वर्ग के बीच बैठे इस तरह के लोग समाज के इस वर्ग को अक्षम गति देने में अपनी अहम भूमिका निभा रहे हैं। आज भी पश्चिम बंगाल में मध्यवर्गीय समाज का एक दल है जो समाज को कूपमंडूक बनाने के लिये इस बात की घोषणा करते हुये घूम रहा है कि सूरज पृथ्वी का चक्कर लगाता है। वे लोग विकास की पूरी दिशा ही बदल देना चाहते हैं। इस तरह के पात्रों को अमरकांत ने भी बक्सा नहीं हैं। अमरकांत ने बड़े साहब के इस तथ्य को सामने इसी कारण लाते हुये कहलवाया- "बड़े सरकार ने मूंछ पर ताव देकर कहा -'हम लोगों के साथ जो अन्याय हुआ है, उसका फल अच्छा न निकलेगा। इस दुनिया में क्षत्रीय ही शासन करते हैं और कोई नहीं। यह जाति ही इसलिए पैदा हुई है। राजनीति और शक्ति की बातें और लोग नहीं समझ सकते। आप कांग्रेस का शासन देख रहें हैं न ? इन कुछ वर्षों में ही मालूम हो गया कि ये लोग देश को रसातल में ले जाएँगे। किस तरह घुस खोरी हो रही है? जो अपने को अभी तक देवता समझ रहे थे, वे राक्षसों से भी बदतर हो गये हैं। दो चार पैसे के लिए वे बड़े से बड़ा अन्याय कर सकते हैं, समझे कि नहीं? मैं तो आपके सामने आज कह रहा हूँ कि ये ही कांग्रेसी कुछ दिनों बाद हमसे माफी माँगेगे और हमसे प्रार्थना करेंगे कि शासन सत्ता हम सम्हाल लें। मैंने तो सुना है कि ऐसी बातचीत चल रही है भीतर ही भीतर।"[4] इस बातचीत को बड़े सरकार एक ऐसे व्यक्ति के सामने प्रस्तुत कर रहे थे जो आजाद देश के विकास के लिए अपना सब कुछ कुर्बान करने के लिए तैयार बैठा था। इन लोगों के लिए ऐसे व्यक्तियों का कोई महत्व नहीं था। बड़े सरकार इस बात को एक ऐसे इन्जीनीयर के सामने रख रहे थे जो बड़ी ईमानदारी व लगन से देश को निर्मित करने का सपना देख रहा था। ऐसे व्यक्ति के मन में किसी के प्रति दया, ममता नहीं होती। इस तरह के व्यक्ति समाज के लिये कोढ़ होते हैं। ये लोग किसी भी तरह की जिम्मेदारी से भागने वाले होते हैं। समाज का शोषण करते हुये हर संभव कोशिश करते हैं कि वह उनकी रखैल बन जाय। बड़े सरकार बड़ी-बड़ी बातें करते भले हों लेकिन चरित्र से निहायत कमजोर किस्म के व्यक्ति के रूप में इस रचना में रचनाकार द्वारा प्रस्तुत किये गये हैं। इधर-उधर मुँह मारने के पश्चात् जब वे अपनी काम- लिप्सा को शान्त नहीं कर पाते तब अपने घर में इसकी व्यवस्था करना उचित समझते हैं। घर में अपनी काम-लिप्सा को शान्त करने हेतु जब महराजिन के रूप में ग्वालिन को लाता है तब वह यह नहीं सोचता कि उसके क्रिया कलाप से घर के सदस्यों पर क्या असर पड़ेगा। उसके घर में उसकी बेटी अर्थात

हेमा की उम्र इतनी अधिक थी कि वह घर में होने वाले सारे क्रिया कलापों को अच्छी तरह से समझती थी। हेमा स्वयं स्वीकार करती है कि वह इस उम्र में थी कि बड़े सरकार के करतब को कुछ न कुछ समझती अवश्य थी वह कहती है- "जो शराब पीता है और शान-शौकत तथा सुख-सुविधाओं की जिन्दगी व्यतीत करता है, उसके लिये यह बहुत साधारण बात होती है। बड़े सरकार का साथ-संग अच्छा नहीं था। उनका आचरण हर दृष्टि से भ्रष्ट था। वह जुआ खेलते तथा शराब पीने के अलावा कोठे पर जाते थे।"[5] अमरकांत ने हेमा के माध्यम से दिग्भ्रमित मध्यवर्गीय समाज का दोहरापन प्रस्तुत किया है। हेमा आगे कहती है "वह इसी तरह बाहर के शहरों में निकल जाते थे। बिजनेश खोजने का बहाना करके, वह गुलछर्रे उड़ाने जाते। उनके साथ नवाब साहब होते या कुछ अन्य लोग। वे किसी होटल वगैरह में जाकर ठहर जाते। वे वहाँ खाते पीते, शराब उड़ाते और वेश्यायों की गोद में पड़े रहते। इसके अलावा वह कारोबार के बारे में भूलकर सोचते नहीं; उसका नाम नहीं लेते। और जब पैसे खत्म होने का होता तो वह होश में आते थे और तब उनके पाँव घर की ओर मुड़ते थे। इस तरह न मालूम कितने वर्ष बीत गये, और बड़े सरकार विभिन्न क्षेत्र की स्त्रियों का आनन्द उठाने के लिये उस तरह की यात्रायें करते रहते।"[6] उसके पिता घाट-घाट का पानी पीने के लिये इधर-उधर आते जाते रहते थे। इसको वे अपनी प्रतिष्ठा समझते थे उनको इस बात की चिन्ता जरा भी नहीं थी कि किस तरह से उनका घर-संसार चलेगा। मध्यवर्ग के इस रूप का सामने आना बहुत जरूरी है जिससे वे सारे मध्यवर्गीय समाज के व्यक्ति अपने आपको अच्छी तरह से पहचान सकें जो विकास की गति से पीछे हो गये तथा जो आज के विनाशकारी बाजारवादी ताकतों के समक्ष निढाल होकर अपने वर्ग की ताकतों से च्यूत हो गये हैं। इस वर्ग की बड़ी विशेषता है वर्तमान से ज्यादा भविष्य की चिन्ता करते हुये अपने वर्तमान को भोग नहीं पाना। भविष्य की चिन्ता करते-करते वर्तमान की हत्या कर बैठता है जिसकी चर्चा बहुधा रचनाकारों ने किया है। एक सच्चाई यह भी है कि इस वर्ग में एक वर्ग ऐसा है जो वर्तमान की हत्या करते हुये न तो भविष्य का होता है और न वर्तमान का। इसकी तरफ लोगों का ध्यान जाना अनिवार्य है। इसको रचनाकार ने समझा तथा 'आकाश पक्षी' में जगह देकर समाज के इस बुराई को सामने लाकर मध्यवर्गीय समाज के अध्ययन को पूरा किया।

### 3.2.2 शिष्टाचार का खोखलापन

इस वर्ग में शिष्टाचार का खोखलापन अन्य वर्गों की तुलना में ज्यादा होता है, यह कभी-कभी इतना अधिक होता है कि बोझ लगने लगता है। 'आकाश पक्षी' में हेमा के घर वालों का दिखावापन इतना दुरूह हो जाता है कि उसके घर आये इंजीनियर साहब की पत्नी अपने आपको सहज महसूस नहीं कर पाती रवि की माँ हेमा की माँ के बुलाने पर जब हेमा के घर आती है तब हेमा की माँ अपने बड़प्पन को दिखाने के लिए अपनी बेश कीमती साड़ी पहन लेती है, उनके आने की तैयारी बड़े जोर शोर से इस कारण करती है क्योंकि उसे अपने बड़प्पन को दिखाने के लिए वह बेचैन हैं हेमा बताती है-"माँ ने अपनी सबसे बेशकीमती साड़ी और सभी गहने निकाल लिए। उनके आने के पहले वे खूब सजधज गयी थीं। नख से सिख तक वे गहनों से लद गयी थीं। निःसंदेह अपनी शान-शौकत, अपनी उच्चता एवं अपनी प्रतिष्ठा के लिए वह अपने पूर्ण वैभव का प्रदर्शन करना चाहती थीं। इस प्रदर्शन के द्वारा वह अपनी उपेक्षा भी प्रकट करना चाहती थीं।"[7] मध्यवर्गीय समाज में इस तरह की सामाजिक विसंगति हर तरफ से देखने को मिलती है। इस तरह की बातों का चित्रण हम अमरकांत के अन्य उपन्यासों में भी

पाते हैं। 'काले उजले दिन' में कथा नायक दिखावेपन के कारण रजनी को अपने घर आने का न्योता नहीं देता। वह जब भी उसके घर जाने की बात कहती है तब वह उसको बाद में ले जाने का बहाना बनाकर टाल देता है। जब एक दिन उसको पता चलता है कि उसकी अनुपस्थिति में रजनी उसके घर आयी थी तब वह इस बात से नहीं खीझता कि रजनी उसके घर क्यों आयी। उसको तो गुस्सा कुन्तो पर आता है कि वह किस तरह से घर को रखी होगी तथा किस तरह से उसका स्वागत की होगी। वह मन ही मन सोचता है "पर मुझे रजनी पर मन ही मन बहुत गुस्सा आया। वह कैसे यहाँ चली आयी। मैंने तो उसको कभी अपने घर का पता भी ठीक से नहीं बताया था! मैंने बार-बार मना किया था कि वह अभी न चले और मैं स्वयं उसको निमंत्रित करूँगा, परन्तु उसने मेरी बात पर विश्वास न किया। ऐसी ही मुर्ख ता से बेइज्जती होती है। यह भी कोई कायदा है! उसने कांति को देखकर क्या सोचा होगा? उसका घर कितना सजा-घजा है और मेरा घर कितना साधारण है? उसने मुझे गँवार और पिछड़ा हुआ समझा होगा।"[8] इसी तरह की बात को इनकी अन्य रचना 'परायी डाल का पक्षी' में भी देखा जा सकता है दीपक के यहाँ जब टंडन साहब अचानक आ जाते हैं तब वह लज्जा से घर में अफरातफरी मचा देता है। उसे अपनी पत्नी पर गुस्सा आता है। टडंन के आने के पश्चात दीपक की जो गति होती है उसका उल्लेख करते हुये रचनाकार ने लिखा-"दीपक को भारी संकोच और शर्म ने घेर लिया। टंडन से उसकी हाल में दोस्ती हुई थी। वह कई बार उसके घर जा चुका था। वहाँ खा-पी चुका था, व उसकी पत्नी से देर तक बातचीत कर चुका था। वे दोनों पति-पत्नी कितने कायदे से रह रहते थे! उनके बच्चे कितने साफ-सुथरे और कैसे ढंग से बातचीत करते थे। वहाँ जाकर उसका ह्रदय अपूर्व परितृप्त के साथ घोर असंतोष से भर उठता था। उसका घर कैसा बेढंगा-सा दीखता था एक तो ढंग के सामान नहीं। फिर भी वे सामान ऊल-जलूल ढंग से जहाँ-तहाँ ठूंसे हुये थे। उसने अपने दोनों बच्चें की ओर देखा, जो पास की दरी पर बैठ कर पराठे खा रहे थे। उनके कपड़े और मुह कितने गंदे हैं उसको उनके खाने का तरीका बहुत असभ्यतापूर्ण लगा। उसने अपनी पत्नी की ओर देखा, जो रसोईघर में बैठी सिर नीचा करके चूल्हा फूंक रही थी। पता नहीं क्यों उसके दिल में अपनी पत्नी के प्रति असीम क्रोध उमड़ने लगा।"[9] अमरकांत ने बड़ी सावधानी से इस वर्ग की उन कमजोरियों को चुन-चुन कर अपने कथा साहित्य में रखा है। दीपक के इस गुस्से को प्रकट करने के साथ इस तथ्य को स्पष्ट करना कदापि नहीं भूलते कि दीपक जैसे मध्यवर्गीय समाज के युवकों का अपने घर को अपने करतब से कितना अव्यवस्थित रखते हैं।

### 3.2.3 नारी संदर्भ

मध्यवर्गीय समाज की महिलायें सामान्यत: पतियों के प्रति ज्यादा भावुक तथा इमानदराना व्यवहार अपनाती हैं। उनके पति नामक जीव उस पत्नियों के साथ वैसा व्यवहार नहीं अपनाते जिससे पारिवारिक सौहार्द्र बढ़े। रचनाकार ने अहिल्या तथा कुन्तो के माध्यम से नारी के इस सामाजिक संदर्भ को प्रस्तुत करते हुये कहा है- "समय पर आप खाना खा लिया करें। समय पर न खाने से तन्दुरुस्ती ठीक नहीं रहती"[10] तथा वह एक जगह जब यह कहती है कि कथा नायक उसे अपना दफ्तर दिखा दे उस समय कथा नायक के मन में भले गुस्सा आया हो लेकिन कांति के कहने का मतलब कुछ और न होकर यह था कि वह समय पर खाना खा लिया करे। कथा नायक इस बात को जानता है कि बिना उसके कांति खाना नहीं खायेगी इसके बावजूद वह ठीक समय पर नहीं आता। अहिल्या दीपक के बड़ी देर से आने

पर उसके ऊपर गुस्सा करते हुये कहती है "साफ बात है कि दीपक उसे जानबूझकर सताता था। वह उसकी कत्तई परवाह नहीं करता। उसका मन अहिल्या से ऊब गया था। वह कुछ बोलती नहीं तो देखती भी नहीं? उसके क्या हौसले नहीं थे? वह दिन-रात छाती-फाड़ काम करती थी, उससे क्या कभी दीपक ने एक बार पूछा, 'कहो, कैसी तबियत है?'और स्वयं क्या एक बार भी कहा था कि वह सिनेमा-थियेटर देखना चाहती है या उसको बढ़िया साड़ी चाहिये या बालियों के बिना उसके कान सूने है? वह तो खुद अपनी ओर से पति को कष्ट नहीं देना चाहती थी, परन्तु दीपक ने उसकी भावनाओं की कभी कद्र नहीं की। वह तो उसको विवाह करके लाई हुई स्त्री नहीं बल्कि खरीदी हुई लौंडी-बांदी समझता है।"[11]
मध्यवर्गीय समाज में स्त्रियों के प्रति स्थिति आज बहुत कुछ बदली है। यह बदलाव समाज के उस हिस्से में इस कदर नहीं दिखाई पड़ती जहाँ की महिला समाज को अमरकांत ने अपने कथा साहित्य का हिस्सा बनाया है। वहाँ के महिलाओं की सामाजिक स्थिति भले ही पहले से बेहतर हो लेकिन शहरी पढ़ी-लिखी महिलाओं से आज भी बहुत खराब है। कहीं-कहीं तो यह भी देखने को मिलता है कि महिलाओं की हालत ठीक उसी तरह की है जिस तरह के चित्रण को हम अमरकांत के कथा साहित्य में देखते हैं। अमरकांत ने भारतीय समाज की उन महिलाओं को अपने कथा साहित्य में हिस्सा बनाते हुये पतियों द्वारा रौंदते तथा उनका शोषण करते हुये दिखाया है जो महिलायें पढ़ी-लिखी नहीं है जिस महिला के पास अपना कोई आर्थिक आधार नहीं है वे प्रताणित हैं। 'काले उजले दिन' की रजनी के पास अपना आर्थिक आधार है इस कारण कथा नायक उसका शोषण तथा उस पर अत्याचार उस तरह से नहीं कर पाता जिस तरह से कान्ति पर कर पाया है। रचनाकार ने इस तरह के पात्रों को केवल उपन्यासों में ही नहीं बल्कि कहानियों में भी रखा है। इनकी कहानियों की वे महिलायें जिनके पास अपना आर्थिक आधार है सहज ही दूसरे का शिकार नहीं हो पातीं किसी के लिये यह संभव नहीं हो पाता कि उनका आसानी से शोषण कर सके। 'मूस' कहानी की मुनरी का शोषण परबतिया तथा मूस दोनों मिल कर इस कारण कर पाते हैं क्योंकि न तो उसके पास शिक्षा थी और न ही अपना कोई आर्थिक आधार। जब इनमें से एक चीज को ग्रहण कर लेती है तब वह परबतिया तथा मूस के शोषण के दुर्ग से बाहर चली जाती है। मध्यवर्गीय समाज में यह परिवर्तन देखने को पाया जा रहा है कि शिक्षा उनके जीवन के स्तर को बदल रहा है, स्व-निर्भरता बढ़ रही है। पहले स्त्रियाँ शिक्षा के अभाव में जहाँ पति, प्रेमी या घर के बड़े-बूढ़े के अनुशासन में अपनी जिन्दगी बर्बाद कर देती थी उन लोगों की मान मर्यादा को अपना सब कुछ समझते हुये अपने जीवन को निःसार बनाती थीं आज महिला समाज में शिक्षा के प्रसार ने अमूलचूल परिवर्तन ला दिया है। रचनाकार ने कहानियों में समाज में घट रहे इस परिवर्तन को स्पष्ट रूप में सामने रखने की कोशिश की है। 'लड़का-लड़की' कहानी की तारा के पिता ने उसे आधुनिक शिक्षा दिलाई इस कारण वह अपने होने के वजूद को पहचान पाती है। शिक्षा ने तारा के भीतर जिस जागृति को भर दिया वह 'सूखा पत्ता' की उर्मिला से एवं 'आकाश पक्षी' की हेमा से बिल्कुल अलग किस्म का है। जब तारा की माँ तारा को डांटते हुये गाली देती है उस समय तारा तथा उसकी माँ के बीच के वार्तालाप को सुनकर समाज की महिलाओं में आयी सजगता के बारे में अंदाजा लगाया जा सकता है
"माँ यह ठीक नहीं है" तारा ने कहा।
" क्या ठीक नहीं है?"
"गालियाँ देना।"
अरे मेरी भौजी तू मुझे सिखाने चली है? आओ तो झाड़ू से बात करती हूँ।"

तारा का मुँह क्रोध से तमतमाने लगा और आँखें चमकने लगीं। उसने झनझनाती आवाज में कहा, "आप मेरे प्रति ऐसी जबान इस्तेमाल नहीं कर सकतीं।"

* * * * * * * * * * *

तुझे घर से भगाती हूँ..... ।"

"मैं कहीं नहीं जाऊँगी।" तारा ने दृढ़ स्वर में कहा।

"क्या कहा? तू शादी नहीं करेगी?"

नहीं..... नहीं।"

"तो क्या करेगी छाती पर मूँग दलेगी?"

"मूँग क्यों दलूँगी? मैं अधिक से अधिक पढ़ूँगी और अपने पैरों पर खड़ी होऊँगी। मैं अपनी समस्या खुद हल करूँगी, तुमको चिन्ता करने की जरूरत नहीं है।"[11] भारतीय मध्यवर्गीय समाज में स्त्रियों के बदलते स्वरूप का स्वागत होना चाहिये था। इतनी बड़ी घटना का स्वागत शहरी मध्यवर्गीय समाज ने किया लेकिन आज भी गाँव की स्थिति में वह सुधार नहीं आ सका है जिस सामाजिक सुधार को आना चाहिये था। समाजिक ढाँचा जिस तरह से दाम्पत्य जीवन के लिये निर्धारित किया गया था वह इनकी कहानियों में टूटता हुआ दिखाई पड़ता है। इनके उपन्यासों की महिला पात्र जिस तरह से पति नामक जीव से हर समय संकोच करती हुई दिखाई पड़ती हैं उनके द्वारा किये गये सभी अत्याचार चुप-चाप सहने में ही अपनी भलाई समझती है। वहीं 'शाम' कहानी की लता महेन्द्र के गैर जिम्मेदराना व्यवहार से ऊब जाती है वह अपने पति महेन्द्र के शोषण को उस हद तक बर्दास्त नहीं करती जिस हद तक कान्ति या अहिल्या सहती है। महेन्द्र जब हर समय व्यंग्य बाण बरसाकर उसका मानसिक शोषण करता है उस समय लता भी कुंठित होकर उसकी उपेक्षा करने लगती है। महेन्द्र पारिवारिक जिम्मेदारियों से बिल्कुल विमुख हो जाता है उस समय लता उससे कहती है "यहाँ तो महीना खत्म होने के पहले ही रासन खत्म हो जाता है। आप तो दोस्तों के बीच गप्पे लगाते हैं और मुझे मुहल्ले भर से माँग-माँग कर बच्चों का पेट पालना पड़ता है। सबके सामने एक भगौना आटा और एक छटाँक चावल के लिये गिड़गिडाती हूँ और दूसरों की फुसफुसाहट और आनी-बानी बर्दास्त करती हूँ। खुद उपास करती हूँ, पर सबके सामने दो रोटी रखने की कोशिश करती हूँ।"[13] लता अपने पति को पति न मानकर साथी मानती है। इस कारण वह उसकी कमियों को सामने रखने में जरा भी नहीं हिचकती। इनके उपन्यासों के महिला पात्रों की भाँति लता पति के सारे अवगुणों को जानते हुये अपना मुह बंद नहीं किये रहती। वह समय के नजाकत को पहचानती है तथा उसके आधार पर चाहती है कि उसका घर संसार चले। वह अपने पति से उसके निकम्मेंपन को लेकर लड़ती है, झगड़ती है उसकी बातों का उचित विरोध करती है। उसके द्वारा किये गये कृत्यों को देखकर यह लगता है मानों वह समाज को सही दिशा देना जानती है तथा महिला समाज की समस्या को सामने ही नहीं रखती बल्कि अपना पक्ष भी रखने में नहीं हिचकती। महेन्द्र उसको दिये गये खाने को एहसान के रूप में जताना चाहता है तथा उससे कहता है "एहसान को घोलकर इस तरह न पीओ।"[14] इसके जबाब में वह जिस बात को कहती है, वह महिला समाज को अपनी अस्मिता की पहचान कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। वह कहती है "लता की आँखें लपटों की तरह लहक उठी, "एहसान?"

"हाँ, एहसान।"

"मुझ पर एहसान किसी ने नहीं किया है।"
"तुम तो नमकहरामी की बात करोगी ही।"
"हाँ, मैं आपका खाती हूँ, पर उसका पाई-पाई चुका देती हूँ।" उसके मुह से फिचकुर छूटने लगा।
"तुम क्या चुकाओगी?"
"दिन-रात लौंडी-मजूरिन की तरह काम जो करती हूँ।"[15] जहाँ 'परायी डाल का पक्षी' की अहिल्या इसको मानती है कि उसका पति उसको लौंडी-वांदी की तरह रखता है। वह दीपक से अपने किसी भी दर्द को नहीं बता पाती। वह घर में अकेली रहती है दीपक इसकी चिन्ता नहीं करता। प्राय: देर से घर आता है अहिल्या चाहकर भी इस कारण को नहीं जान पाती। वह अपने भीतर छिपाये सारे दर्द की भोक्ता स्वयं बनी रहती है। इनकी कहानियों में मामला दूसरी तरह का है महिला पात्र जबान खोलकर शिकायत करती है कि उसको किस तरह से रखा जा रहा है। वह अपने पति की शिकायत करते हुये कहती है कि उसके पास साहस की कमी है उसके पास यह माद्दा ही नहीं है कि वह नये काम को कर सके वह कहती है "हाँ मर्द में जैसी हिम्मत होनी चाहिये, वैसी हिम्मत नहीं है।"[16] इसके बाद जब उसका पति उससे इस बात को निरर्थक बताता है। पति के जिद करने पर कहती है "आप काम और परिश्रम से डरते हैं। आप पहले ही सोच लेते हैं कि आपको सफलता नहीं मिलेगी, इसलिए आप कोई नया काम हाथ में नहीं लेते और न आप अपनी बुद्धि का इस्तेमाल करते हैं। आज का जमाना मेहनत का जमाना है, जो मेहनत करेगा, वह सुख भोगेगा। लोग दफ्तर में ही काम नहीं करते, बल्कि दो-दो तीन-तीन काम और करते हैं।" इसके बाद वह उसके जिद के करने पर कहती है "आप लापरवाह और घमंडी भी हैं। आपको इससे मतलव नहीं कि आपके वाल-वच्चे किस तरह रहते हैं। आपको गरीबी से, दुख से सन्तोष है। संतोष इसलिये कि आप कुछ करना नहीं चाहते।"[17] अमरकांत की कहानियों में महिला पात्र जिस साहस से सामने आती हैं उस तरह से इनके उपन्यासों में नहीं दिखाई पड़ती हैं। उपन्यास में जहाँ स्त्री समस्या को एक-एक करके उठाया गया है वहीं इनकी कहानियों में उन समस्यायों को रचनाकार ने महिला समाज को मुखर बनाकर जवाब दिलाते हुये यह स्पष्ट किया कि महिला समाज किस तरह से समाज की रूढ़ियों से मुक्त होने की लड़ाई में शामिल हो गयी है। मध्यवर्गीय समाज का संतुलित विकास तब तक संभव नहीं है जब तक इस समाज के स्त्री-पुरुष को समान अधिकार तथा दोनों के काम को महत्व न दिया जाय तथा दोनों की भावनाओं को सही ढंग से कद्र किया जाय। यदि इस तरह से नहीं हो सका तव समाज के समुचित विकास की बात छोड़ दें समाज पीछे चला जायेगा। स्त्री विमर्श के तहत जहाँ स्त्री मुक्ति की बात करते समय स्त्रियों को पुरुषों से अर्थात दाम्पत्य जीवन को खंडित करने की बात कुछ विचारकों द्वारा कही गयी वहीं अमरकांत ने इसके विरोध में अपने कथा साहित्य को खड़ा किया। इनका कथा साहित्य चाहता यह है कि दाम्पत्य सूत्र टूटे नहीं बल्कि उसके भीतर की सारी बुराइयाँ खत्म हो, दोनों एक दूसरे के पूरक बनें, दोनों की ताकत से समाज में विकास हो सके। यह जरूरी है कि मध्यवर्गीय समाज के परिवार की रीढ़ मजबूत हो यदि ऐसा हो सकेगा तव बाजारवादी शक्तियों से आसानी से निपटा जा सकता है अन्यथा बाजार मध्यवर्गीय समाज के पारम्परिक मूल्य को खत्म कर देगा। परम्परा विहीन समाज सूखे पत्ते की तरह होता है जिसका अपना कोई अस्तित्व नहीं होता इसकी नियति वन जाती है इधर से उधर लुढ़कने की।

मध्यवर्गीय समाज की महिलाओं के प्रति यह धारणा बनी हुई है कि जो महिला ठीक से देख ले या हस दे वह उसको प्यार करने लगती है। रचनाकार ने उपन्यासों में समाज के लम्पट मिजाज लोगों को समाज की महिलाओं का शोषण करते हुये दिखाया है तथा यह भी दिखाया है इस तरह के लोग ऐसे होते हैं जिनका सामाजिक आधार मजबूत नहीं होता। ऐसे लोग अपनी पत्नियों को बहुत कुरूप तथा निहायत किस्म का आवारा साबित करते रहते हैं। 'परायी डाल का पक्षी' का नायक दीपक उर्मिला के सामने अहिल्या के बारे में इसी तरह की बात को करता है। वह कहता है "मेरी तो भाभी जिन्दगी बरबाद हो गई! मैंने सोचा था कि शादी-व्याह करके कुछ सुख-शान्ति मिलेगी, लेकिन वह न होना था। मैने शुरू से ही उसके सुख-दुख का इतना ख्याल रखा, लेकिन वह तो सोचती है जैसे मैं उसका नौकर हूँ। जब तक घर में रहता हूँ, सारा काम करता हूँ, दम लेने की फुर्सत नहीं। तिस पर न समय पर खाना, न समय पर नाश्ता। लड़के हमेशा गन्दे रहते हैं। मकान में समान इधर-उधर रहते हैं। आखिर मैं ही सब काम करूंगा तो दफ्तर कौन जायेगा? आप लोग हैं, मौका जरूरत पड़ने पर बाजार हाट चली जाती है, बाहरी मर्दो से बोल-बतिया लेती हैं, कहीं भी अकेले जा सकती हैं।"[17] जबकि ऐसी बात नहीं होती है। उसकी पत्नी बहुत सुन्दर है। इस बात को उपन्यास का एक पात्र बताता है। जिसके माध्यम से इस तरह के लोगों द्वारा कही जाने वाली महिला समाज के लिये स्वतंत्रता आदि की बातें कितनी झूठी साबित होती है। इसको स्पष्ट करते हुये कहता है 'ये स्त्रियों की आजादी के समर्थक हैं। इसमे शिर्फ यही जोड़ना होगा 'अपनी स्त्री की नहीं, दूसरों की स्त्रियों की।' मध्यवर्गीय समाज के दीपक जैसे युवक इस तरह की बात को दूसरी महिला के सामने रखकर उसके प्रति प्रलोभन व्यक्त करते है। इस समाज के लम्पट युवकों की यह स्पष्ट धारणा होती है कि "इस भवसागर में स्त्रियाँ मछलियाँ हैं और वह मछुआ। वह कहता था जाल डालने के लिये बुद्धि और अनुभव की आवश्यकता होती है, बुरे काम के लिये कोई भी स्त्री बुरी नहीं होती और परिश्रम वहीं करना चाहिए जहाँ सफलता की आशा हो।"[19] इसी सफलता के दाव-पेंच को रचनाकार ने अपने उपन्यासों में दिखाया। कहानियों को लिखते समय इन्होंने यह बात साफ कर दिया कि समाज की महिलायें मछली नहीं है और पुरुष न तो मछुआ। 'मछुआ' कहानी में जब अनिलेश नीरजा को मछली बनाने की कोशिश करता है तब वह 'काले उजले दिन' की रजनी की तरह रचना के कथा नायक को स्वीकार नहीं लेती बल्कि उसका विरोध करती है। वह निलेश से कहती है "जाइये...... यहाँ से जाइये" नीरजा सहसा चीख पड़ी। इस तरह का विरोध हम इनकी कहानियों में ही पाते हैं। इसी तरह से 'प्रिय मेहमान' की नीलम है जो नीरज के द्वारा किये गये बहलावे, कि किसी तरह से उसको फांसा जाय को निरस्त करते हुये कहती है "मैं भी जानती हूँ कुछ-कुछ।" वह व्यंग्य पूर्वक हँसी।
"हाँ आपके जानने में मेरे जाने में फर्क है। आप हाथ देखकर बताते हैं, मैं बिना हाथ देखे ही बता सकती हूँ।"[20]

### 3.2.4 विवाह

विवाह का मध्यवर्गीय समाज में असाधारण महत्व होता है। मध्यवर्गीय समाज में बड़े-बूढ़े ठीक समय पर बच्चों की शादी अपनी जाति में करना सामाजिक प्रतिष्ठा समझते हैं। अगर बच्चें का विवाह ठीक समय पर नहीं कर पाये तो वे अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा को खतरे में मानने लगते हैं। इस समाज में माँ-बाप लड़की एवं लड़का दोनों के विवाह की चिन्ता करते हैं इसमें भी लड़की की शादी की चिन्ता अधिक सताती है। क्योंकि एक तो दहेज की समस्या दूसरी सामजिक बदनामी का डर कि बेटी की इज्जत पर

कोई दाग न लग जाय तथा यदि बेटी ज्यादा बड़ी हो गयी तो उसके लिये लड़के वाले हो सकता है ज्यादा दहेज की मांग करें। इस कारण यह भी देखा जाता है कि इस वर्ग के माँ-बाप बेटी की शादी करना गंगा नहाना समझते हैं। जिसका परिणाम यह होता है कि वे बिटिया की शादी करने के पश्चात इसकी भी चिन्ता नहीं करते कि उनकी बिटिया अपने ससुराल में किस तरह से है। शादी किसी भी नवयुवक के लिये बहुत बड़ी बात होती है इसके बाद भी इस मामले में घर के बुजुर्ग अपने बाल-बच्चों से इस बावत बात नहीं करना चाहते तथा उसके पसन्द-नापसन्द को नजर अंदाज कर देना अपने लिये बड़ी इज्जत की बात समझते हैं। अमरकांत ने समाज की इस समस्या पर अपने प्राय: उपन्यासों में प्रकाश डाला है। 'सूखा पत्ता' में नायक कृष्णकांत तथा उर्मिला के साथ इसी तरह का व्यवहार किया जाता है। कृष्णकांत जब उर्मिला तथा अपने प्रेम का उल्लेख करते हुये जाति के बंधन को बेकार कहता है- "मैंने किसी की बेइज्जती नहीं की है। उर्मिला और मैंने एक-दूसरे को प्यार किया है और हम शादी करना चाहते हैं। यही बात पिछले कई दिनों से आप लोगों से कहना चाहता था। चाचीजी, अब जमाना तेजी से आगे बढ़ रहा है। लडके और लड़कियाँ एक-दूसरे को पसन्द कर शादी कर लेते हैं। यह जाति का बंधन एक ढकोसला है, चाची जी। इससे बुरी कोई चीज नहीं। यह इन्सान को इन्सान से अलग करता है।"[21] ऐसी बात समाज का वह नवयुवक कहता है जो पढ़ा लिखा है तथा आधुनिक विचारों वाला है। आज भी समाज में ऐसे युवकों के वैचारिक महत्व को समझने की कोशिश लोग नहीं करते है। करते वही हैं जिसको वे प्राचीन समय से ढोते चले आ रहें हैं इसी कारण खुले विचारों की उर्मिला तथा कृष्णकांत के होने के बाद भी उन लोगों को समाज के सामने झुकने के लिये मजबूर होना पड़ता है। इसी बात को हम 'आकाश पक्षी' में रवि तथा हेमा के संदर्भ में देखते हैं। रवि तथा हेमा को परम्परा, जाति के नाम पर अलग करने के साथ-साथ हैसियत के नाम पर भी अलग किया जाता है। समाज में हैसियत का धौस सबसे ज्यादा वही देता है जो आर्थिक दृष्टिकोण से बहुत कमजोर तथा असंतुलित रहता है। हेमा की माँ आर्थिक दृष्टिकोण से बहुत कमजोर एवं असंतुलित होने के बावजूद धमकी यह देती हैं "शादी! तुम मेरी बेटी से करना चाहते हो? अपना मुँह गड्ढे में धो आओ। मेरी बेटी जहाँ चाँद है, तुम बौने हो। मेरी बेटी सोना है तो तुम नाली के कीड़े हो। तुम क्या खाकर उसका मुकाबला कर सकते हो? तुमको मैं साफ-साफ कह देती हूँ कि तुम इस ख्याल को अपने मन से निकाल दो। तुम अभी लड़के हो, इसीलिये मैं तुमसे ऐसा कह रही हूँ और आगे से तुम कभी भी मेरे घर के अन्दर कदम न रखना। अगर तुमने ये दोनों बाते न मानी तो तुमको इसके लिये पछताना पड़ेगा। तुम हम लोगों को जानते नहीं। जिस दिन राजा साहब गुस्सा हो जायेंगे, तुम्हारा सारा खानदान साफ करके रख देंगे।"[22] यह बात उसके द्वारा कही जा रही है जिसके राजा साहब अपने बाल बच्चों के लिये ठीक से दो जून की रोटी का इन्तजाम नहीं कर सकते थे जिनको इसके लिये उसके घर पर अपनी आलमारी गिरवी रख कर रूपया उधार लेना पड़ा था। राजा साहब को दुनियादारी से कोई मतलब नहीं रहता था। उनका मतलब सीधे तौर से अपनी जैविक आवश्यकताओं से ही था। इस समाज में यह प्राय: दिख जाता है कि रूढ़िगत परम्पराओं का निर्वाह वही सबसे अधिक करता है जो जितना अधिक निरीह तथा अपनी जिम्मेदारियों से भागने वाला होता है। राजा साहब का घर अपने बड़े भाई के कारण तथा खुद राजा साहब के करतब से गर्त में पहुँचा था। इसके बावजूद उनके दिमाग में आधुनिक विचारों की बातें किसी भी तरह से प्रवेश नहीं पातीं। बड़े साहब की बेटी जब अपनी माँ से गिड़गिड़ा कर यह कहती है कि वह रवि के बारे में ऐसा कुछ न कहे तब हेमा की माँ का यह कहना-"चुप हरामजादी, कमीनी, माँ-बाप की इज्जत निलाम करने वाली! तुझे शर्म नहीं आती?****** अगर यही बात थी तो मुझसे कहती..... मैं तेरी शादी कर देती। तेरे लिये मैं एक से एक सुन्दर दुल्हा ढूँढ सकती हूँ। तेरी शादी मैं राजसी शान-शौकत से कर सकती हूँ। तूने समझ क्या रखा है हमको?"[23] इस तरह की बातों को जब हम समाज के उन वर्गों में देखते हैं जो आधुनिक विचारों वाले हैं तथा जिनके घर के लोग अपना तथा

अपने परिवार समेत समाज की जिम्मेदारी को उठाने में जरा भी नहीं हिचकते उन लोगों का व्यक्तिगत पारिवारिक तथा सामाजिक निर्णय खोखला नहीं होता। इन्जीनियर साहब का लड़का रवि उस इज्जत की बात को खोखला बताता है जिसको हेमा की माँ अपनी सबसे बड़ी पूँजी मानती हैं। हेमा की माँ की बातों का जवाब देते हुये रवि कहता है- "चाची जी," रवि ने कहा, "आप गलत समझ रहीं हैं। जिस चीज को आप खानदान समझ रहीं हैं, वह एक खोखली चीज रह गयी है। उसमें कोई दम नहीं है। एक जमाना था जब लोग पढ़े-लिखे नहीं होते थे, जब उनकी बुद्धि खुली नहीं होती थी तो इस किस्म की बातें किया करते थे। लेकिन आज वे बाते नहीं चलेंगी। जब लड़के-लड़कियाँ पढ़ लिखकर यह समझ लेंगे कि हमारे माँ बाप झूठे ही अपनी जाति और खानदान के घमंड में चूर रहते हैं तो आपकी बातों को मानने से इन्कार कर देंगे। तब न वे आपकी जाति को मानेंगे न धर्म को।"[24] इस तरह की बातें उन लोगों के लिये कोई मायने रखने वाली नहीं थी जो अपने तथा अपने परिवार की जिम्मेदारी नहीं उठा सकते थे। बड़े साहब तथा रानी माँ में यह फर्क रचनाकार ने जरूर रखा है कि जहाँ राजा साहब किसी भी प्रकार से इन्जीनीयर साहब के द्वारा समझाये जाने पर भी इस बात के लिये तैयार नहीं होते कि उनकी बेटी की शादी इन्जीनीयर साहब के लड़के से हो तथा वे इसी बात की गुहार लगाते रहे- "क्या कहा आपने? रवि से मैं हेमवती की शादी कर दूँ? कैसे हिम्मत हुई आपको ऐसी बात करने की? क्या हम लोग इतने गिर गये हैं कि अपनी जाति को छोड़कर जिस-तिस से शादी करते फिरें? क्या हैसियत है आपकी? माना कि आप इन्जीनीयर हो गये हैं, पर कौआ कौआ रहेगा और कोयल कोयल। हम है सूर्य वंशी। सैकड़ों वर्षों से हमारे पुरखे राज-पाट करते आये हैं, हम शादी क्या अपने से नीची जाति में कर सकते हैं?"[25] हेमा की माँ राजा साहब से ज्यादा जिम्मेदार हैं इस कारण वह हेमा की समस्या को बड़े साहब की अपेक्षा ज्यादा नजदीक से समझने की कोशिश करती हैं तथा हेमा के सामने अपनी मजबूरी प्रकट करती है। जिस मजबूरी को हेमा की माँ हेमा के समक्ष प्रस्तुत करती हैं वह मध्यवर्गीय समाज के लिये बहुत बड़ी समस्या है। इस कारण रचनाकार ने 'सूखा पत्ता' से लेकर 'आकाश पक्षी' तक में इस समस्या को उठाया है। वह हेमा से कहती है- "अगर हम तेरी शादी कर दें उससे तो तेरी और बहनों का क्या होगा? हमारी इज्जत-आबरू कहाँ रहेगी? माना कि जमाना तेजी से बदल रहा है..... पर जमाना बदलने का मतलब यह तो नहीं कि आदमी अपनी जाति, धर्म, इज्जत-सब कुछ छोड़ दे"[26] इस तरह की मानसिकता को रखने वाले परिवार अपने हाथों अपने भविष्य की हत्या कर देते हैं। वह हेमा को बहुत प्यार करती हैं इसके बावजूद उसकी शादी एक ऐसे व्यक्ति से कर देती हैं जो उसको शादी के किसी भी अर्थ को प्रस्तुत नहीं कर पाता। वह यह मानती थी- "जब तक मैं जिन्दा रहूँगी, तुझे कोई चिन्ता करने की बात नहीं है। देख बेटी, अपना घर, अपनी जाति, अपना धर्म सबसे अच्छी चीज होती है। इनको जो छोड़ता है, उसकी कहीं भी इज्जत नहीं होती। अगर तेरी दूसरी जाति में शादी कर दी जाय तो तेरी शुरू में कुछ इज्जत जरूर होगी, लेकिन बाद में तुझ पर सभी थू-थू करेंगे। इसलिये मैं यह सब कह रहीं हूँ।"[27] इस तरह के माँ-बाप जिस तरह की चिन्ता करते हैं वह हेमा एवं रवि जैसे युवकों के भविष्य से जाना जा सकता हैं। रवि के पिता के साथ राजा साहब बात करते हुये जब पूरी तरह से रवि तथा हेमा के साथ को संबंध को खत्म कर देते हैं तब उनको हेमा की शादी की चिन्ता होने लगती है, अपनी इस चिन्ता को खत्म करने के लिये वे कुँवर साहब सरीखे लोगों को ढूँढ लेते हैं। कुँवर साहब उनके लिये इस तरह के व्यक्ति थे जो उनको बड़े साहब तथा उनके परिवार के लिये संकट मोचन की बनकर आये थे। हेमा इस बात का जिक्र करते हुये कहती है- "मेरे माँ-बाप बड़े ही खुश थे। बड़े सरकार की तो चाँदी थी। अब उनको तो जिन्दगी भर गुलछर्रे उड़ाने की गारन्टी मिल गयी थी।"[28] अंतत: गऊ समझी जाने वाली हेमा की शादी उसके माँ-बाप कुँवर साहब जैसे जन्तु से कर देते हैं जिससे सब कुछ तो किया जा सकता है लेकिन प्यार नहीं किया जा सकता। हेमा के माँ-बाप जैसे लोग किस तरह से अपने भविष्य को मशीन बनाने के लिये मजबूर कर देते हैं। इसका बयान करते हुये हेमा कहती है 'मैं अपने माँ-बाप और

परिवार के लिये अपना जीवन तिल-तिल मोम की तरह जला दूँगी। अब यह शरीर और जीवन एक जिन्दा लाश की तरह है। मेरे अन्दर कोई भावना नहीं है। मैं एक मशीन बनूँगी, एक पुर्जा। मैं पुर्जा बनने के लायक ही हूँ।"[29]

मध्यवर्गीय समाज की लड़कियों को लेकर दूसरी बड़ी समस्या यह है कि ये लोग जिसको अपना सबकुछ मानते हैं उसके लिये शादी से पूर्व के लिये दुनियाभर के जहालतों को उठाते हैं परन्तु शादी कर देने के पश्चात् उसी बेटी की खोज खबर लेना अपने लिये समस्या समझते हैं। अमरकांत ने 'सुन्नर पांडे की पतोह', 'काले उजले दिन' तथा 'परायी डाल का पक्षी' में बड़ी कुशलता से इस समस्या को उठाया है। राजलक्ष्मी अपने माँ-बाप की दुलारी बिटिया थी। उसको घर वालों से बहुत प्यार मिलता था। वह अपने बाप के आखों की तारा थी। रचनाकार ने पचकौड़ी तिवारी का राजलक्ष्मी से लगाव का वर्णन करते हुये लिखा है- "पचकौड़ी तिवारी की तबियत तो एक मिनट भी उसके बिना नहीं लगती थी। जब वह किसी काम से बाहर गये होते, उस समय भी उनका ध्यान राजलक्ष्मी में ही रहता।"[30] इसके साथ जब उनकी पत्नी उनसे कहती- "चौपट कर देंगे, यह पराया धन है, इसको सिर इतना थोड़े चढ़ना चाहिये।"[31] इस पर तिवारी अपनी पत्नी पर बिगड़ जाते। उन्होंने कभी भी राजलक्ष्मी को पराया धन न मानकर अपनी प्यारी बिटिया माना, इतना सब कुछ होने के बावजूद जब महेश्वर पांडे राजलक्ष्मी के साथ दुराचार करने की कोशिश करता है ओर बदनामी के डर से भाग जाता हैं तब पचकौड़ी तिवारी अपनी माँ से सलाह मसविरा करके अपनी बेटी की शादी झुल्लन पांडे से कर देता है। वह प्यारी बिटिया की शादी अपने पुरोहित घरभरन मिसिर के कहने पर झुल्लन पांडेय से कर देते हैं। वह इस बात की खोज नहीं करते हैं कि उसके घर वाले क्या करते हैं। झुल्लन के माँ-बाप किस स्वभाव के हैं वे तो इस बात से भी बेफिक्र रहते हैं कि झुल्लन का बड़ा भाई किन कारणों से डकैत बन गया है। उन्होंने मात्र राजलक्ष्मी का विवाह करना अपना सबसे बड़ा लक्ष्य मान लिया था। तिवारी की बिटिया जब पहली बार अपने ससुराल जाती है तभी उसे अपनी सास की कठोरता का ज्ञान हो जाता है। इसी कारण वह अपनी सास के पहली मुलाकात के बाद कहती है "वह अपनी रुलाई रोक नहीं पाई थी। कैसे घर में उसके बाबू ने उसे भेज दिया था।"[32] शादी के बाद राजलक्ष्मी ने बहुत ज्यादा अनैतिकताओं को सहा, बड़ी से बड़ी तकलीफों को सहा। उसको घर से निकलना पड़ा, दर-दर की ठोकरें खानी पड़ी। इन सब तथ्यों के बावजूद उसके पिता अपने धर्म का निर्वाह करने के पश्चात् एक बार उसके यहाँ झाकने नहीं जाते कि उनकी प्यारी बिटिया किस हालत में है। मध्यवर्गीय समाज का बेटियों के प्रति इस तरह का दृष्टिकोण बहुत सी लड़कियों को गलत कदम उठाने के लिये बाध्य करता है, समाज के भेड़िये आसानी से अपना शिकार बनाते हैं।

रचनाकार मध्यवर्गीय समाज की इस अनैतिकता को सामने लाकर समाज को यह सोचने के लिये मजबूर किया है कि जाति-पाँति का बंधन एक कोढ़ है। इस वर्ग के पढ़े लिखे आधुनिक विचारों वाले युवक अपनी मर्जी से शादी करते हुये पाये जाते हैं। इस तथ्य से अमरकांत परिचित थे। इन्होंने इस समस्या को अपने किसी उपन्यास में मुख्य विषय के तौर पर नहीं रखा। इन्होंने मध्यवर्गीय समाज के इस विकट समस्या को मात्र नोटिश के तौर पर 'सुन्नर पांडे की पतोह' में रखा है। रचना में सुन्नर पांडेय की पतोह को जब तक शारदा के मन की बातें मालूम नहीं थी तब तक वह शारदा के पिता की रूढ़िगत बातों को मानती है। जब उनको यह मालूम हो जाता है कि शारदा अपने द्वारा पसन्द किये गये लड़के से शादी करना चाहती है। उस समय किसी की परवाह किये बगैर शारदा का साथ देने के लिए प्रतिबद्ध होती है। इसके लिए उसको शारदा के पिता से खरी खोटी सुननी पड़ती है। उपन्यास के इस घटना के माध्यम

से रचनाकार ने यह दिखाया है कि किसी भी संस्था से व्यक्ति जुड़े भले लेकिन विचार से वह खुले मन का नहीं हो सकता। इसके लिये उसके पास अपनी समझ होनी चाहिये। मध्यवर्गीय समाज का व्यक्ति अपने दुहरे व्यक्त्वि के कारण शारदा के पिता जैसी गलती को प्राय: कर बैठता है। रचनाकार चाहता है इस समाज के लोग कथनी और करनी के अंतर को खत्म करें।

### 3.2.5 महत्वाकांक्षा

मध्यवर्गीय समाज का व्यक्ति स्वप्नजीवी तथा महत्वाकांक्षी होता है। आर्थिक कमजोरियों के कारण हर समय इस वर्ग के लोंगों को अपनी महत्वाकांक्षों की हत्या करनी पड़ती है। उच्च तथा निम्न वर्गों की तुलना में मध्यवर्ग की स्थिति अत्यंत विचित्र है। योग्यता तथा साधनों के अभाव में निम्नवर्ग जहाँ था वहीं है और इस बात की चिन्ता करने की क्षमता उसमें न होने के कारण वह निश्चिन्त है। दूसरी ओर उच्चवर्ग साधन-सम्पन्न होने के कारण तथा देश की शासन व्यवस्था में सीधे-सीधे भाग लेने के कारण निश्चिन्त है। लेकिन मध्यवर्ग अपने पास योग्यता तथा क्षमता के बावजूद अपनी आकांक्षा पूरी नहीं कर पाने के कारण चिंतित, निराश, घुटन भरी जिन्दगी जीने को विवश है। इस वर्ग के पास क्षमता समाज के अन्य वर्गों की तुलना में अधिक होता है इसलिये सबसे ज्यादा असमर्थता झेलता है। अमरकांत के उपन्यास 'सूखा पत्ता', 'आकाश पक्षी', 'परायी डाल का पक्षी' तथा 'काले उजले दिन' के पात्र इसी तरह की विषम परिस्थिति झेलते हैं। 'सूखा पत्ता' का नायक कृष्णकांत इसी दुविधा का शिकार होने के कारण मंसूबा बहुत बनाता है लेकिन सफलता बहुत कम मिलती है। उपन्यास के शुरू में ही कथा नायक की महत्वाकांक्षा को आसानी से देखा जा सकता है। कथा नायक का यह कहना- "मैं एक ऐसे नायक के रूप में अपनी कल्पना करने लगा, जिसने देश के सारे अन्याय और शोषण को मिटा दिया हो और जिसकी वीरता और त्याग से प्रभावित होकर कोई अत्यधिक सुन्दर, शिक्षित और शरीफ लड़की अपनी समस्त शक्ति से मुझे प्यार करने लगी हो।"[33] मध्यवर्गीय समाज का युवक महत्वाकांक्षी होता है। महत्वाकांक्षा जब व्यक्तिगत स्वार्थों से लिप्त हो जाता है तब उसकी महत्वाकांक्षा मात्र महत्वाकांक्षा ही बन कर रह जाती है। पूरे उपन्यास में रचनाकार ने कृष्णकांत को बड़े मंसूबे बनाते दिखाता है। वह चाहता है देश को अपने दम पर आजाद करा दे, वह चाहता है अपने इलाके का सबसे अधिक शक्तिशाली बन जाये। वह चाहता है उर्मिला से प्यार करके दुनिया के सामने प्यार का ऐसा मिसाल पेश कर दे कि लोग वाह-वाह कर दें। वह चाहता है कि समाज में व्याप्त जाति-पाति के बंधन को समाप्त कर दे। वह इन सारी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने के लिये कुछ कदम चलता भी है लेकिन वह अपने हर मंसूबे में सफल नहीं हो पाता है। रचनाकार का मानना है जब तक महात्वाकांक्षा व्यक्तिगत दायरे में चक्कर लगाता रहेगा तब तक वह किसी बड़े मंसूबे को नहीं पा सकता है। इस तथ्य को रचनाकार ने बहुत बार रचना के पात्रों के माध्यम से सामने लाया है। 'परायी डाल का पक्षी' का नायक दीपक अपनी इसी महत्वाकांक्षा के कारण समाज में पैठ मजबूत नहीं बना पाता। जब मध्यवर्गीय समाज का व्यक्ति महत्वाकांक्षा को अपनी गिरफ्त में मजबूती से पकड़ना चाहता है तब वह मात्र समाज तथा परिवार से ही नहीं बल्कि अपने आपको भी धोखा देता है। रचनाकार का कहना है कि मध्यवर्गीय समाज की महत्वाकांक्षा इस तरह की होनी चाहिये जो अपने से ज्यादा देश, समाज, परिवार के बाद व्यक्ति के स्वार्थों को पूरा करने वाला हो। रचनाकार 'सूखा पत्ता' में कृष्णकांत द्वारा इस उद्देश्य को प्रकट करते

हुये कहता है- "बार-बार कृपा शंकर और उसका जीवन मेरे सामने नाच उठता था। वह उस वृक्ष की तरह था, जिसकी जड़ें गहरी होती हैं और जो आंधी बवंडर में भी नहीं उखड़ता; पत्तों फलों से भरी उसकी डालियाँ उसकी सेवा के उत्सुक हो मानों फैली रहती हैं। कृपा शंकर सूखे पत्ते की तरह कभी नहीं था, जो हवा बहे और उसी में उड़ जाता है; हवा बंद होने पर धराशायी, व्यर्थ और बेकाम!"[34] रचनाकार कृपाशंकर नामक पात्र के द्वारा यह बताना चाहा है कि समाज में अपनी जड़ों को वही मजबूत कर सकेगा जो अपनी महत्वाकांक्षा की सीमा के तहत अपने स्वार्थ को ही न पूरा करके समाज, देश के बारे में सोचेगा अन्यथा उसकी गति समाज में कृष्णकांत जैसे पात्रों की तरह होगी।

### 3.2.6 कमजोरी

मध्यवर्गीय समाज का व्यक्ति अपने भीतर की कमजोरी को बखूबी पहचानता है। इस समाज का व्यक्ति महत्वाकांक्षाओं के अतिशय स्वार्थी होने पर बीच-बीच में अपनी आलोचना करता है। मध्यवर्ग की यह खूबी होती है कि वह समाज के दूसरे वर्गों की तुलना में अपने आपको सबसे ज्यादा पहचानता एवं सुधारने के अवसरों को देखकर सुधार भी लेता है। 'सूखा पत्ता' का नायक अंततः जब अपने आपको पहचान पाता है तब उसकी सारी निराशा खत्म हो जाती है वह स्वीकार करता है -" मैं नहीं जानता, कृपाशंकर की बातें क्या खास चीज थी जिसने मेरे मन में अदम्य स्फूर्ति उत्साह फूँक दिया उसके जाने के बाद मैं घंटों सोचता रहा और मुझे ऐसा लगने लगा जैसे कृपाशंकर ने जो विचार व्यक्त किये थे। वे उसके नहीं बल्कि मेरे अपने हों और मैं सालों से वैसा ही सोचता रहा हूँ। यह सब कैसे हो गया? मैंने जो प्रेम किया दुख सहा वह क्या असह्य था? यह सब कैसे संभव हुआ मेरी आत्मघाती निराशा और पीड़ा ने मेरे साथ दगा की और आज यह दुनिया मुझे एकदम नयी लग रही है।"[34] 'काले उजले दिन' की रचना मध्यवर्गीय समाज के व्यक्तियों की कमजोरी को सामने लाने के लिये किया गया है। कथानायक कांति के साथ किये गये अपने छलावे वाले व्यवहार के बारे में सोचता है तथा अपनी गलतियों के बारे में सोचता है। व्यक्ति को अपने भीतर सुधार लाने के लिये जरूरी यह है कि पहले वह जाने कि उसकी गलतियाँ कौन-कौन सी हैं। उच्चवर्गीय समाज का व्यक्ति भौतिक संसाधनों से इतना अधिक अटा-पटा रहता है कि वह अपनी गलती के बारे में सोचना उचित नहीं समझता। निम्न वर्गीय समाज के लोगों के पास रोटी के जुगाड़ के बाद इतना समय नहीं बचता कि वे इस तरह की समस्यायों पर विचार करें।

## 3.3 मध्यवर्गीय जीवन का आर्थिक पक्ष

मध्यवर्गीय समाज की आर्थिक स्थिति इतनी अच्छी नहीं होती कि वे अपने मन के घोड़े को उड़ने के लिये खुला छोड़ सके। विशेषतः निम्नमध्यवर्गीय समाज की स्थिति अत्यन्त दयनीय होती है। मध्यवर्गीय समाज में कमाने वालों की अपेक्षा खाने वालों की संख्या अधिक होती है। इस कारण मध्यवर्गीय परिवार में घुटन का वातावरण बना रहता है। अमरकांत के सभी उपन्यासों में मध्यवर्गीय परिवार का हिस्सा उकेरा गया है जो अर्थाभाव के दंश को झेलता है। 'सूखा पत्ता' उपन्यास के नायक कृष्णकांत के पिता पेशे से वकील सामाजिक प्रतिष्ठा बचाये रखने की जद्दोजहद में अपने परिवार की गाड़ी खींचते दिखाई पड़ते हैं। परिवार में कमाने वाले मध्यवर्गीय अन्य परिवार की भांति कृष्णकांत के पिता हैं। जबकि इस पूरे परिवार में खाने वालों की संख्या छः है। इस कारण घर विपन्नता की हालत में रहता है। कृष्णकांत

को अपने मंसूबों को पूरा करने के लिये अपने मित्रों के साथ सेठ के घर में चोरी करनी पड़ती है। उसे इस यातना से गुजरना पड़ता है कि पकड़े जाने पर उसकी कुटाई हो सकती है। कृष्णकांत अपने अजीज मित्र को अर्थाभाव के कारण आश्वासन दिये जाने के बावजूद रूपया नहीं दे पाता। इस वर्ग में पूरे घर को चलाने की जिम्मेदारी घर में उस व्यक्ति के हाथों में होती है जो घर का कमासुत होता है इसलिए पूरे घर पर उसका शासन चलता है। वह अपने आपको घर का शासनकर्ता समझता है।

'काले उजले दिन' में कथा-नायक के पिता की हालत वही है जो 'सूखा पत्ता' में है। कथा नायक का पिता घर भर में एकमात्र कमाउ है। घर में उस पर निर्भर रहने वाले कांति समेत पांच सदस्य हैं। चूँकि घर की कमाई कथा नायक के पिता द्वारा होती है इस कारण जिस तरह के फरमान को चाहता है उस तरह के फरमान का एलान करता है। कथा नायक कहता है- "पता नहीं पिता जी को क्या हो गया था। वह शहर के अत्यधिक प्रतिष्ठित व्यक्तियों में से थे। वह शहर की सामाजिक एवं राजनीतिक हलचलों में भी शामिल होते थे। दान-पुण्य के मामले में वह सबसे आगे रहते थे। दूसरों को उपदेश वह कितना देते थे परन्तु मेरे लिये इनमें से कुछ भी नहीं था। मुझे तो देखते ही उनके तेवर चढ़ जाते। वह मुझसे सीधे मुँह बात भी नहीं करते और जब करते तो कटाह कुत्ते की तरह।"[36] मध्यवर्गीय समाज के परिवारों में यह भी देखा जाता है कि घर की आमदनी पर अधिकार पुरुषों के अलावा घर की मालकिन अर्थात् उस पुरुष की पत्नी का होता जिसका पति रूपया कमाने की क्षमता रखता है। उपन्यास में कथा नायक पर पिता से अधिक विमाता का जुल्म होता है क्योंकि वह उस पुरुष की पत्नी थी जिसका पति रूपया कमा पाने की क्षमता रखता था। इसी कारण कथा नायक की पत्नी कांती का अपमान करते हुये चिल्लाकर कहती है- "मैं वह औरत नहीं हूँ जो यह सब बरदाश्त करूँगी। मैं तो वह औरत हूँ बदतीमीजी पर जबान खींच लेती हूँ। साफ-साफ सुन लो, तुम मुझसे कोई आशा न करो। वह भी ऐसा कह रहे थे। हमने पाल-पोसकर बड़ा कर दिया, पढ़ा-लिखा दिया। जब लड़का बड़ा हो जाय तो उसको अपना हाथ पैर चलाना चहिये। अपने बाल-बच्चों का पालन पोषण करना चाहिये। तुम, जो कुछ जरूरत हो, अपने मर्द से माँगो। भई, यह तो दुनिया का नियम है। मर्द मजबूत रहता है तो स्त्री को सुख मिलता है। पर अगर मर्द ही कमजोर रहे तो स्त्री को कौन पूछे? ऐसी स्त्री तो हर जगह से दुरदुराई जाती है।"[37] काले उजले दिन में रचनाकार ने इसी सिद्धान्त के अधार पर यह दिखाया कि आर्थिक ढंग से जब मध्यवर्गीय समाज की महिला मजबूत होती है उस समय वह कितना क्रूर हो जाती है। इस रचना में कथा नायक का पिता उसकी माँ के कहने के कारण उसके पिता को ऐसे रिश्ते को खोजने के लिये विवश करता है जो ज्यादा से ज्यादा दहेज में रूपया दे सके। कथा नायक इसका वर्णन करते हुये कहता है "पिता जी ने बहुतों को दौड़ाया। जाहिर है कि मैं कोई योग्य वर नहीं था, इसलिए शादी का प्रस्ताव लेकर आनेवाले राजा-महाराजा नहीं हो सकते थे। वे साधारण मध्यवर्गीय परिवारों के ही लोग हो सकते थे और ऐसे ही लोगों से पिता जी से अपना काम निकालना था।"[38] इसके बाद कांति के साथ कथा नायक का परिवार जुड़ जाता है। कथा नायक के परिवार में उसके माँ-पिता तथा उसका भाई होता है। कथा नायक की माता अपनी माँ नहीं होती वह विमाता होती है। मध्यवर्गीय समाज में विमाता अर्थ के लोभ के लिये जिस तरह के रूप को अख्तियार कर सकती है ठीक उसी रूप को हम इस रचना में पाते हैं। कथा नायक की सौतेली माँ अपने विकृत रूप को शादी के समय से ही लाना चालू कर देती है। कथा नायक कहता है- "माता जी रोज सुनाती थीं, 'भिखमंगे हैं सब। इतने सस्ते में कहीं शादी होती है? अच्छे घर में शादी

करने के लिये बड़ा कलेजा होना चाहिए। वे सब पैर पर गिरने लगे तो इनको भी दया भी आ गयी। रूपये-पैसे का हमको मोह नहीं है। ऐसे पैसे हमने बहुत देखे हैं। बस, हमको लड़की चाहिए।[40]" मध्यवर्गीय समाज में यह परम्परा स्त्रियों को सताने के क्रम में बहुत बड़ी भूमिका अदा करती है। कांति का शोषण इसी तरीके से उस समय से होना चालू हो जाता है जिस समय वह घर में कदम रखती है। कांति का व्यवहार बहुत नम्र था उसके बारे में कथा नायक कहता है "कान्ति एक बहुत सीधी-सादी लड़की थी। वह छ: सात दर्जे तक पढ़ी लिखी थी। वह अधिक बोलती न थी, बल्कि बहुत-सी बातों में धीरे से मुस्कुरा देती थी।"[41] कान्ति घर परिवार में सामंजस्य स्थापित के लिए घर के सारे कामों को करने के साथ-घर के लोगों का ख्याल भी रखती है। कान्ति के ऊपर विमाता के अत्याचार का कसाव धीरे-धीरे बढ़ने लगता है। वह चाहती है कि परिवार के सभी सदस्यों के साथ उसका तालमेल ठीक-ठाक हो लेकिन उसकी मंशा पूरी नहीं होती। कथा नायक के माँ का उग्र रूप उसकी शादी के कुछ दिन बाद चालू हो जाता है। वह जिस आर्थिक आकांक्षा को इस शादी से पूरा करना चाहती थी वह नहीं कर पाती। वह कांति के प्रति निष्ठुर से निष्ठुर हो जाती है। कथा नायक कहता है "शादी के कुछ ही दिनों बाद माताजी ने अपना रूप बदल लिया था। शादी होने तक वह अत्यधिक कोमल बनी रहीं, लेकिन अब उन्होंने अपना उग्र रूप दिखाना शुरू कर किया। कान्ति शुरू से ही काम-धाम करने लगी थी। परिवार में उस समय काफी लोग आ गये थे। वह चुपचाप सारे परिवार का भोजन बना देती। खाना बनाने के अलावा वह झाड़ू-बुहारू करती, कपड़े साफ करती। रात को खाना बनाने के बाद वह सभी बुजुर्ग स्त्रियों के बदन में तेल लगाती थी। वह सबको प्रसन्न रखने की कोशिश करती, परन्तु माता जी का मुँह सदा ही फूला रहता। उनको कान्ति का कोई काम पसन्द नहीं आता था। वह झनक-झनक कर बोलती थी।"[42] कान्ति का जीवन इस तरह निरीह बन जाता है क्योंकि समाज के वे माता-पिता जिनका आर्थिक आधार ठीक नहीं होता वे चाहते यह हैं कि किसी तरह से उनकी बिटिया की शादी हो जाय। अर्थाभाव के कारण यह बड़े असमंजस की बात होती है कि जिससे शादी कर रहे हैं उस लड़के बारे में यह पूछ लें कि लड़का क्या करता है। मध्यवर्गीय समाज में जिस लड़के से शादी की जाती है यदि उसका आर्थिक आधार ठीक नहीं है उस समय उस लड़की की सामाजिक प्रतिष्ठा कुछ नहीं रहती। जिस तथ्य को कथा नायक की माँ कहती है कि 'पर अगर मर्द ही कमजोर रहे तो स्त्री को कौन पूछे? ऐसी स्त्री तो हर जगह से दुरदुराई जाती है।' कांति भी इस तथ्य को समझती थी। इस कारण अपनी परिस्थितियों पर बिना किसी तरह का असंतोष व्यक्त किये वह कथा नायक को तैयार करने की फितरत में जुट जाती है कि किसी तरह से रूपया कमाये जिसके आधार पर उसकी सामाजिक प्रतिष्ठा बन सके।

मध्यवर्गीय समाज में जिन बच्चों के माता-पिता की आर्थिक हालत ठीक नहीं होती तथा जिनको किसी भी सामाजिक जिम्मेदारियों से कुछ मतलब नहीं रहता। ऐसे लोग अपने पास किसी तरह की व्यवस्थित आर्थिक सुदृढ़ता प्राप्त नहीं करते। उनके घर की बेटियों की हालत समाज के सभी वर्गों की बेटियों से खराब होती है। 'आकाश पक्षी' के बड़े सरकार की स्थिति इसी प्रकार की थी। बड़े साहब हेमा के पिता एवं हेमा के घर संरक्षक की भूमिका में हैं। पूरे परिवार में वही सबसे ज्यादा अपनी जिम्मेदारियों से भागने वाले हैं। बड़े सरकार मानने को तो यह मानते थे कि "जैसा जमाना आए वैसा करना चाहिए। अब तो ठाकुर लोगों का जमाना गया ....... अब बनिया का जमाना आ गया है। अब हमें भी बनिया बनाना पड़ेगा। जो इस जमाने में बनियागीरी नहीं करेगा, वह पैसे-पैसे के लिए मुहताज रहेगा..... ।"[43] इसके

बावजूद बड़े साहब न तो किसी काम को करते हैं न ही किसी जिम्मेदारी को गम्भीरता पूर्वक निभाते हैं। उनके दिमाग में अभी तक यह बात बनी रहती है कि देश अभी भी वही है जो अंग्रेजों के समय में था। उनको इस बात से भी कुछ फर्क नहीं पड़ता कि यह देश आजाद हो गया है वे इस आजादी को सबसे बड़ा कांटा मानते हैं। बड़े सरकार भविष्य के भारत निर्माण करने वाले इन्जीनीयर के सामने यह कहते हुये गर्व करते हुये कहते है "हम लोगों के साथ जो अन्याय हुआ है, उसका फल अच्छा न निकलेगा। इस दुनिया में क्षत्रीय ही शासन कर सकते हैं, और कोई ही नहीं। यह जाति ही इसलिए पैदा हुई है। राजनीति और शक्ति की बातें और लोग नहीं समझ सकते"[44]। बड़े साहब अकर्मण्य हैं पर बातें लम्बी-लम्बी करते हैं, वह प्रतिदिन हवाई कल्पना में जीने वाले व्यक्ति हैं वह ऐसी ही कल्पनाओं में जीते हुए फिजूलखर्ची करते हैं व पूरे परिवार को अंधकूप में ले जाते हैं, जिस परिवार का मुखिया जुआ, शराब और वेश्यागमनी हो वह अपने परिवार को कहाँ ले जायेगा, कहा नहीं जा सकता। जुए में थोड़ा बहुत पैसा जीतकर बड़े साहब जिस प्रकार की हवाई बात करते हैं वह उनकी मानसिकता को स्पष्ट करने वाला है "किसी दिन इसी तरह मेरी किस्मत खुलेगी। जब तक देर हो रही है, हो रही है। जिस दिन मेरा सितारा बुलन्द होगा, उसी दिन इस दरवाजे पर दो-दो तीन-तीन कारें खड़ी होंगी।........ मैं ठीक हजरतगंज में या बनारसीबाग में मिनिस्टरों के बंगलों के पास एक जमीन लूँगा और एक ऐसा घर बनाऊँगा जिसमें मिनिस्टर लोगों को अपनी तुच्छता की याद आती रहेगी। बस, किस्मत खुलने दो। इस भगवान के राज में देर है अंधेर नहीं।"[45] हेमा के परिवार में मात्र बड़े साहब ही नहीं वरन उसकी माँ भी दिखावे में कहीं से कम नहीं रहती जब प्रथम बार रवि की माँ हेमा के घर आती है तब उसकी माँ दिखावे के मामले में बड़े सरकार से जरा भी पीछे नहीं रहती। आर्थिक सुरक्षा की दीवार को न खड़ा करने वाले बड़े सरकार की गलतियों का शिकार होती है हेमा। समाज का वह वर्ग जिसके पास आर्थिक दृष्टिकोण से संघर्ष से खड़े होने की क्षमता नहीं होती वह लम्पट होने के साथ बड़ी-बड़ी बातों को करता है एवं घर के किसी सदस्य की भावनाओं की कद्र नहीं करता। बड़े सरकार के साथ यह बात बिल्कुल ठीक बैठती है। हेमा की भावना को वे उस समय महत्व नहीं देते जिस समय अपने समस्त सामाजिक आधार खो चुके थे। समाज का ऐसा व्यक्ति अपने स्वार्थों को पूरा करने के लिये हेमा जैसी उच्च विचार, समाज में फैली जाति-पाँति की दीवारों को तोड़ने वाली को अपने स्वार्थ की खातिर कुवर युवराज जैसे भेड़िये के पल्ले बाँध देता है। कुँवर साहब को उसे स्वीकार लेने के लिये वाध्य किया जाता है क्योंकि सामन्ती परिवेश से लड़ने के लिये जिस यंत्र की जरूरत थी वह उसके पास नहीं था। इसलिए बड़े सहज ढंग से कुँवर साहब की इस बात को मान लेती है कि राजा साहब की हालत मुझसे देखी नहीं जाती। बेचारे कितने शरीफ हैं! हमेशा शान-शौकत से रहे, किसी के सामने सिर नहीं झुकाया....... और आज बेचारे चारों ओर भटकते रहते हैं..... पैसा-पैसा के लिये मुहताज रहते हैं। तुम्हारे भाई हैं- बहने हैं। अगर उनको पढ़ाया लिखाया नहीं गया तो वे किसी काम के लायक नहीं रह जायेंगे। सबका भार मेरे ऊपर रहेगा। मैं सबको अधिक से अधिक पढ़ाऊँगा। राजा साहब की बुढ़ौती सुख से कटेगी। तुमको किसी बात की चिन्ता नहीं करनी चाहिये। तुम मुझे बहुत पसंद हो.... ।"[46] हेमा अपनी कमजोरियों के कारण अपने आपको इन शर्तों पर बेच देती है। वह अपने आपको बेचने के बाद यह मानती है कि "मैंने जानबूझकर मुक्ति और स्वतंत्रता का रास्ता छोड़ा और गुलामी के रास्ते को पकड़ लिया। मैंने कभी भी गुलामी का प्रतीक रियासती शान-शौकत को पसन्द नहीं किया। मैं इन्सानियत को प्यार करती रही। मैं इन्सानियत का आदर करती रही। लेकिन कायरता ने मुझे गुलाम बनाकर रख दिया।"[47] हेमा को बड़े

सरकार जैसे निहायत कमीने लोग आर्थिक सुरक्षा को प्राप्त करने के लिये बेच देते हैं। रचनाकार ने समाज में अर्थ के कारण किस तरह के जघन्य कृत्य हो सकता हैं। इसका विवरण पाठकों के समक्ष रखा है। हेमा जीवन भर इस बात के लिये पछताती है कि अर्थिक अव्यवस्था का वह शिकार हो गयी।

मध्यवर्गीय समाज में बच्चियों को दूसरे के घर की सम्पत्ति समझा जाता है। 'सुन्नर पांडे की पतोह' की राजलक्ष्मी के बारे में यही धारण रहती है। समाज में जब तक महिलाओं के बारे में यह धारणा बनी रहेगी तब तक समाज में उनकी इज्जत नहीं हो सकती। धन की प्रवृत्ति है एक हाथ से दूसरे के हाथ में जाने की। राजलक्ष्मी जैसी बहुत सी महिलाओं की दुर्दशा इसी कारण ज्यादा हो रही है। महिलाओं को समाज का व्यक्ति जब धन की तरह व्यक्तिगत सम्पत्ति मानने लगता है उस स्थिति में वह उसकी समस्त संवेदनाओं को कुचल देता है। समाज में समायी यह धारणा बदलनी चाहिये। अमरकान्त ने समाज की इस समस्या को उपन्यासों के साथ-साथ अपनी कहानियों में भी रखा है। 'लड़की की शादी' के पिता को दूसरों के घर की सम्पत्ति को घर से बाहर करना है। अत: लड़की की शादी के सारे हिसाब-किताब को लगाने के बाद यही निश्चित करते हैं कि किसी तरह उसकी शादी कर दें। जिसके पास धन अधिक होता है वह अपनी लड़की की वास्तविक हैसियत को नहीं देखता। उसकी इच्छा होती है कि किसी तरह से अपने से अधिक हैसियत वाले के यहाँ शादी करवा दे। मध्वर्गीय समाज की बहुत बड़ी समस्या होती है या तो वह अपनी बेटी की शादी करके गंगा नहा लेता है या बेटी के लिये अपनी आर्थिक क्षमता से अधिक बड़े आर्थिक क्षमता वालों के यहाँ जाकर शादी करना चहता है। इस तरह के लोगों का मानना होता है कि "सुख स्वयं नहीं आता, बल्कि वह शक्ति, साहस चतुरायी से खरीदा जाता है।" इसके आधार पर अपनी कुरूप लड़की का विवाह अच्छे-से-अच्छे लड़के से करना चाहता है। समाज में अर्थ के आधार पर जब लडकियों की शादी कर दी जाती है उस समय भी लड़कियों की सामाजिक स्थिति बहुत अच्छी नहीं हो पाती है। अत: इस बात का ध्यान देना चह्रिये कि अर्थ की ताकत को इस तरह के कामों में न लगाकर लड़की के संवेदना की ताकत को काम में लाना चाहिये।

इस तथ्य को स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि आर्थिक तंगी एक बात है आर्थिक रूप में दिवालिया होना दूसरी। बड़े सरकार दिवालिया हैं लेकिन राजलक्ष्मी के पिता, कान्ति के पिता दिवालिया नहीं हैं। जिस तरह से बड़े सरकार दिवालिया होने पर भी खाने-पीने मौज मस्ती में पीछे नहीं होते। वैसी समस्या दूसरे पात्रों की नहीं है।

मध्यवर्गीय समाज में प्राय: यह देखा गया है कि जिनके पास आर्थिक आधार अव्यवथित है ऐसे लोग यदि समझदारी से नहीं रहते तब उनकी पारिवारिक स्थित बड़ी दुरूह हो जाती है। मध्यवर्गीय समाज के पास आय इतना ही होता कि किसी तरह से महीने भर के हिसाब-किताव करके चले। यदि ऐसा नहीं करता तब उसका जीवन उच्छृंखल हो जाता है। इससे परिवार में तनाव बढ़ जाता है। इनके किसी भी उपन्यास में महिला-पुरुष दोनों आर्थिक उपार्जन में लगे हुये नहीं दिखाई पड़ते। उपन्यासों में जहाँ पुरुष पात्र रूपया खर्च करने की आजादी रखता है वहीं महिला पात्र के पास यह अधिकार नहीं रहता। महिला पात्र पुरुष पात्र के ऊपर निर्भर रहती है। 'परायी डाल का पक्षी' की पात्र अहिल्या को इसी बात का दु:ख रहता है। दीपक घर का मुखिया है उसके पास नौकरी से जितना मिलता है उसको वह महीने खर्च

के हिसाब से खर्चता। उसका सारा रूपया महीने के पहले ही खत्म हो जाता है। इसके परिणाम स्वरूप वह सभी आर्थिक जिम्मेदारियों से भागना चाहता है। दीपक अपने सुख को ही सबसे महत्वपूर्ण मानता है। उसको इस बात से कुछ मतलब नहीं रहता है कि उसकी पत्नी की कुछ इच्छायें हो सकती है। अहिल्या उसके बारे में कहती है "उससे क्या दीपक ने एक बार भी पूछा, 'कहो कैसी तबीयत है?' और स्वयं क्या एक बार भी कहा कि वह सिनेमा-थियेटर देखना चाहती है या उसको बढ़िया साड़ी चाहिए या बालिओं के बिना उसके कान सूने हैं? वह तो खुद अपनी ओर से पति को कोई कष्ट देना नहीं चाहती, परन्तु दीपक ने उसकी भावनाओं की कभी कद्र नहीं की। वह तो विवाह करके लाई हुई स्त्री नहीं बल्कि खरीदी हुई लौंडी-बांदी समझता था।"[48] जबकि दीपक का ध्यान दो जगहों पर ही होता है या तो सिनेमा थियेटर में जाये या दोस्तों के साथ गप करे। दीपक एक दिन जब बहुत देर से लौटता है उस समय उसकी पत्नी देर से आने के कारण पूछती है। उस समय दीपक सायकिल का ब्रेक खराब होने की बात बताता है। उससे यह कहता है कि चूँकि यह समय महीने का अंतिम है। इस कारण उसके पास रूपया नहीं है। वह सायकिल के ब्रेक को नहीं बनवा पाया। इस पर अहिल्या उसको दस रूपया इस शर्त पर देती कि उसका रूपया उसको तनख्वाह होने पर लौटा देना होगा। वह दीपक को यह रूपया इस कारण देती है जिससे दीपक ठीक-ठाक रहे एवं सही-सलामत घर आ जाय। वह कहती है "मेरा दिल बहुत पापी है। पता नहीं कैसे औरतें अपने मर्दों से रूपया छिपाकर रखती हैं। इस दस रूपये को मैं दो-ढाई साल से बचाती रही हूँ। मैके गयी थी तो बड़े भैया ने दस रूपये का नोट देकर कहा था कि ये रूपये अशोक को मिठाई खाने के लिए हैं। इस बीच बड़ा से बड़ा काम आया, लेकिन मैंने इसको नहीं निकाला। मुझसे कोई बात हजम हो ही नहीं सकती। आखिर आज यह भी गया। पर मैं कहे देती हूँ, यह मेरा रूपया है, इसको तनख्वाह मिलने पर वसूल करूगी।"[49] दाम्पत्य संबंध के लिये जिस विश्वास की जरूरत होती वह अहिल्या के पास कूट-कूट कर भरा हुआ है। वह चाहती है दीपक चाहे जैसा भी हो है तो उसका पति। इस कारण वह यह जानते हुये कि दीपक उसको किसी तरह की आर्थिक आजादी नहीं देता, जिस तरह से रखना चाहिये वह नहीं रखता। इसके बाद भी वह उसको रूपया दे देती है। दीपक उसकी भावनाओं को रौंदते हुये उस रूपये से जिस काम को करता है, वह काम न तो अहिल्या की जरूरतों को पूरा करता है और न ही परिवार के जरूरतो को। रचनाकार लिखता है "पता नहीं कब से उसका मन मकड़े की तरह जाल बुनने लगा था। महीने के अन्तिम दिन थे। बाबूलाल पानवाले के दो रूपये पिछले महीने के बाकी थे ही, इस महीने भी करीब एक रूपया चढ़ गया था। रमाशंकर के दो रूपये भी अभी तक नहीं दिये जा सके हैं। फिर टंडन के प्रति भी उसका कुछ कर्तव्य होता है। वह हमेशा चाय-पानी अपने घर पर कराता रहता है। घर पर नहीं तो कम-से-कम रेस्तरा में उसका सत्कार किया जाना चाहिए। सक्सेना ने आज सिनेमा दिखाया था, उसको भी एक खेल दिखा देना उचित होगा।"[50] रचनाकार ने इन घटनाओं को रखकर बताना चाहा है कि दाम्पत्य जीवन के लिये आर्थिक विश्वास का होना बहुत जरूरी है। दीपक जैसे लोग जब विश्वास पर ही कुठाराघात करते हैं उस हालत में दाम्पत्य संबंधों का ठीक होना बहुत मुश्किल होता है। भारतीय समाज में बहुत सारी ऐसी महिलायें हैं जिनके पास अपना आर्थिक आधार कुछ नहीं होता। इस हालत में दीपक जैसा व्यक्ति उनका शोषण करता है। भारतीय समाज में इस समस्या से निपटने के कारण समस्त आर्थिक कार्यकलापों का क्रियान्यवन घर की महिला से पूछ कर किया जाता है। जिस घर में यह स्थिति नहीं होती उस घर की महिलायें न तो घर में इज्जत पाती हैं, न घर के बाहर। अहिल्या की दुर्दशा के पीछे यही कारण दीखता है।

इस सिद्धान्त का निर्वाह रचनाकार ने अपनी रचना में दो तरह से किया है एक तो वहाँ जहाँ पुरानी पीढ़ी के लोग रहते है। वहाँ घर के पुरुषों से अधिक घर की महिलाओं का रूपये पैसे पर अधिकार होता है लेकिन जब हम इनके उपन्यासों के उन पात्रों को देखे तो पता चलता है पुरुष अपनी कमाई के प्रति बहुत ईमानदार नहीं है तथा अपनी पत्नियों को कमाई का पूरा हिसाब किताब नहीं देता। आर्थिक मुद्दा किस तरह व्यक्ति को बाहर से बेईमान बनाये या न बनाये घर में मेईमान बनाता ही है। जब पुरुष घर में बेईमान हो जाता है तब किस तरह से व्यभिचारी होता हो जाता है। इस तथ्य को इन्होंने 'काले उजले दिन' एवं 'परायी डाल का पक्षी' में रखा है।

आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण दाम्पत्य जीवन किस तरह से असंतुलित और विद्रूप हो जाता है उसमें कड़वाहट का आना किस तरह स्वभाविक हो जाता है, इसे अमरकान्त ने अपनी कहानियों में प्रदर्शित किया है। अमरकांत निर्धनता के कहानीकार के रूप में भी जाने जाते हैं। रचनाकार ने इस समस्या को इस कारण अपनी रचना में उठाया है क्योंकि यह भारतीय समाज की सबसे बड़ी समस्या है। यह विडंबना ही है कि रचनाकार आर्थिक तंगी को अपने बचपन से लेकर आज तक झेल रहा है। स्वतंत्रता आंदोलन में कूदने से पूर्व उनका सपना था कि स्वतंत्रता के बाद आर्थिक तंगी समाज से समूल रूप से खत्म हो जायेगी पर ऐसा कुछ नहीं हुआ। यह समस्या आज भी वैसी की वैसी बनी हुई है। जहाँ निर्धनता होती है वहाँ सब कुछ विद्रूप हो जाता है व्यक्ति का रहन-सहन वेशभूषा, व्यवहार तथा चरित्र सभी कुछ आर्थिक अभाव के कारण प्रभावित होता है। इनकी कहानियों में निम्नमध्यवर्गीय या मध्यवर्गीय परिवारों की निर्धनता का चित्रण पूरे वातावरण के साथ आया है। 'दोपहर का भोजन' में इस तथ्य को इस तरह से रखा जिसके माध्यम से आसानी से आर्थिक तंगी के तह तक पहुँचा जा सकता है। रचनाकार लिखता है "सारा घर मक्खियों से भनभन कर रहा था। आँगन की अलगनी पर एक गंदी साड़ी टँगी हुई थी, जिसमें पैबंद लगे हुये थे।"[51] इसी प्रकार 'डिप्टी कलक्टरी में निर्धनता के वातावरण का चित्रण बड़े प्रभावशाली ढंग से किया गय है "सारे घर में मुर्दनी सी छाई हुई थी छोटे से आँगन में गंदा पानी, मिट्टी, बाहर से आये हुये सूखे पत्ते तथा गंदे कागज पड़े थे, और नावदान से दुर्गन्ध आ रही थी। ओसारे में पड़ी हुई पुरानी बसहट पर बहुत-से गंदे कपड़े पडे थे और रसोईघर से उस वक्त भी धुँआ उठ-उठकर सारे वातावरण को घटा रहा था। कहीं कोई खटर-पटर नहीं हो रही थी और मालूम होता था कि घर में कोई है ही नहीं।"[52] अमरकान्त ने इस तरह से मध्यवर्गीय समाज की आर्थिक तंगी से उपजी विसंगतियों का चित्रण किया है। यह चित्रण इनके कथा साहित्य को समकालीन कथाकारों से अलग एवं विशिष्ट बनाता है।

### 3.4 मध्यवर्गीय जीवन का राजनैतिक पक्ष

जिस तरह देश की आर्थिक स्थिति का प्रभाव मध्यवर्गीय समाज के व्यक्तियों के जीवन पर पड़ता है उसी तरह देश की राजनैतिक स्थिति का प्रभाव भी इस वर्ग पर पड़ता है। आज राजनीति का प्रभाव मध्यवर्गीय जीवन पर आवश्यकता से अधिक पड़ रहा है। आज का आम आदमी राजनीति और राजनीतिज्ञों के हाथों की कठपुतली बन गया है। उसके सम्पूर्ण भाग्य का फैसला संसद और

विधानसभाओं में होता है। आज की औसत राजनीति विकृति है तथा अधिकांश राजनीतिज्ञों का चरित्र गंदगी, भ्रष्टाचार, तिकड़म तथा स्वार्थपरता से परिपूर्ण है। अमरकांत के कथा साहित्य में राजनीतिज्ञों का मूल स्वरूप तथा मध्यवर्गीय जीवन में उनका प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।

अमरकांत ने अपने कथा साहित्य में आजादी पूर्व राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन में भाग ले रहे युवकों का चित्रण करते हुये युवकों की मानसिकता तथा स्थिति का वर्णन किया है। इनके द्वारा सृजित रचना 'सूखा पत्ता' एवं 'इन्हीं हथियारों से' में बलिया शहर के उन नवयुवकों का चित्रण मिलता है। जिन्होंने राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा किया। 'सूखापत्ता' का कृष्णकांत तथा उसके साथियों के द्वारा जिस तरह के राजनीतिक करतबों को दिखाया वह एक किशोर मन की देश सेवा है। इस उपन्यास की पृष्ठभूमि जिस समय के वातावरण को सामने रखता है वह सन् 1945 के समय को वताता है। इस समय भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन पूरे उभार पर था। गाँधीजी पूरे भारतीय समाज के मानस पर छा गये थे। मध्यवर्गीय समाज का युवक उन्मादी बनकर उनके पीछे-पीछे चल पड़ा था। तमाम स्कूली युवकों ने अपने स्कूली जीवन को विराम दे दिया था। पूर्वी उत्तर प्रदेश बलिया और उसके आस-पास का क्षेत्र तो क्रांतिकारियों का विशेष अड्डा बन गया था। सन 1942 की क्रांति मे तो बलिया पूरे देश में अग्रणी रहा। भारतीय स्वतंत्रता का इतिहास बड़े गर्व से इस बात को स्वीकार करता है। इसी क्षेत्र का कृष्णकांत होने के कारण इस आंदोलन से अपने आपको अछूता नहीं रख पाया। इस आंदोलन में जिस तरह से उस समाज के अन्य नवयुवक शामिल होकर अपने आपकी अहमियत स्थापित करते थे। उसी तरह कथा नायक भी इस आंदोलन से अपने आपको जोड़कर अपने आदर्श रूप को सामने लाता है। वह कहता है कि 'उस समय की स्थिति में राजनीति ऐसा प्रशस्थ पथ था, जिस पर चलने से मेरे मन के आदर्श को आकार मिलता था। सन् 1942 का आंदोलन मेरी आँखों के सामने से गुजरा था ओर उस आंदोलन को जिस तरह दबाया गया था, उससे मैं भलीभाँति अवगत था। देश के क्रांतिकारियों के बलिदान के किस्सों को पढ़-सुनकर यौवन का गर्व और आत्मसम्मान सोये शेर की तरह जाग उठता था। दिल जोश और क्रोध से भर उठता था।' वह अपने इस आदर्श को पूर्णता प्रदान करने के लिये अपने तीन मित्र-मनोहर, दीनानाथ और दीनेश्वर को साथ लेता है। इन तीनों मित्रों के साथ वह देश को आजाद करने के लिये संकल्प लेते हुये योजनायें बनाता है। उसके द्वारा बनायी गयी योजनायें उसके अपरिपक्व मानसिकता की देन भले कहीं जाय लेकिन इससे नहीं मुकरा जा सकता है कि राजनीतिक आंदोलन के प्रवाह में वह बहा था। चूँकि उसके द्वारा बनायी गयी योजनायें उसकी अपरिपक्व मानसिकता की देन थी। इसलिए वे आतंकवादी बनने के लिये भूथरी तलवार इकट्ठा करते हैं, कभी रात के सन्नाटे में ताला तोड़कर गोदाम से एक दो बोरे चीनी चुराते हैं तो कभी केवल खाली बोरे, कभी किसी अंग्रेज समर्थक व्यापारी को बेहोस करने के लिये एक डॉक्टर के यहाँ से क्लोरोफार्म की शीशी चुराते हैं। कभी वे बड़ा से बड़ा काम हेतु भूत प्रेत को अपने वश में करने के लिये श्मशान घाट जाते हैं। इसी दौरान कृष्ण कुमार का संबंध एक आतंकवादी से होता है। वह उससे प्रभावित होता है। कृष्ण कुमार को यातना मिलती है तो इससे उसकी दृढ़ता बढ़ती है। वह कहता है 'मुझे ऐसा लगा कि मैं भयंकर से भयंकर यंत्रणा भी वर्दास्त कर सकता हूँ। इस मार ने मेरी लुप्त चेतना, गर्व, आदर्शवादिता और पुरुसत्व को जगा दिया। मुझमें एक अकल्पित दृढ़ता आ गयी। उसके प्रहार ने जादू की छड़ी का काम किया था और उससे मेरा व्यक्तित्व एकदम बदल गया। मै कायर नहीं हूँ मैं नीच नहीं हूँ, मैं इसके सवर्था अयोग्य हूँ कि मैं अपने देश के

सम्मान को बेच सकूँ। ज्यों-ज्यों मार तेज होती गयी, मुझमें क्रोध पैदा होता गया-एक ऐसा क्रोध जिसका अस्तित्व मुझमें विद्यमान था, जो कुछ ही देर पूर्व असंभव और अस्वाभाविक लगता था।' यह तथ्य इसका संकेत है कि उस समय के समाज में कृष्ण कुमार जैसे लोग राजनीतिक हलचलों से वाकिफ ही नहीं थे वरन उसके हिस्सेदार भी थे। रचनाकार ने राजनीतिज्ञों से जिस तरह के भारत की उम्मीद की थी सामन्तवादी सोच के प्रतिकूल था। इनका मानना था कि देश को मात्र राजनैतिक आजादी ही नहीं चाहिये बल्कि इसे सामन्तवादी सोंच से भी आजाद होना पड़ेगा। अपने इस मन्तव्य को रचनाकार ने 'आकाश पक्षी' में रवि के मुह से कहलवाया है। रवि कहता है "हमारा देश कई सदियों से गुलाम रहा है। सामन्तवाद ने हमारे देश को टुकड़े-टुकड़े करके रखा। उसी की वजह से हमारे देश को गुलामी की जंजीरों में जकड़ना पड़ा। सामन्तवाद और उसकी परम्पराओं को छोड़े बिना, हमारे देश में एकता कायम नहीं हो सकती। हमारा देश तरक्की नहीं कर सकता। जातिवाद, सम्प्रदायवाद आदि समस्याएँ इसी सामन्तवादी समस्या से जुड़ी हुई है, हमको इसके खिलाफ लड़ने के लिये तैयार रहना चाहिए।........ हम सबमें सामन्तवाद, जातिवाद, सम्प्रदायवाद किसी न किसी रूप में घुसा हुआ है और हम उससे मुक्त नहीं हो पाते। जब तक हम अपने देश में जाति, धर्म और वर्गों को खत्म नहीं करते, हम कुछ नहीं कर सकते।"[54] इस तरह की राजनीतिक सोच को रखने वाला रचनाकार स्वतंत्र भारत से जिस तरह की राजनैतिक उपेक्षा को पाया उससे वह बहुत दुखी था। इन्होंने लिखा "एक ओर शरणार्थियों की फौज, सारे वातावरण को विषाक्त करने वाली घटनायें और किस्से, साम्प्रदायिक दावानल और दूसरी ओर सुविधाओं के लिये दौड़। चारो ओर जातिवाद, क्षेत्रवाद का नृत्य दिखाई देने लगा। कालाबाजार, भ्रष्टाचार, गुटबाजी, मटियापरस्ती, धक्कामुक्की। बहुत से प्रतिक्रियावादी, साम्प्रदायवादी, तत्व भी राष्ट्रीय कांग्रेस में चोला बदलकर चले आयें"[54] अमरकांत ने चोला बदलकर सुविधा उठानेवालों से साधारण जनता पर पड़ने वाले दबाव को सामने लाकर 'साधारण जनता के साथ' प्रतिबद्धता स्पष्ट किया है। इन्होंने अन्यायगत परिस्थितियों में रहने वाले पात्रों के जिस विलक्षण व्यक्तित्व को अपनी कहानियों में महत्व दिया वह अद्भुत है। कथाकार के शब्दों में -"उनका साहस, उनकी अद्भुत जीवन शक्ति त्याग बलिदान और बरदास्त करने की क्षमता, उनकी उदारता और विनम्रता उनका आलस्य हार को जीत में परिवर्तन करने की आदत उनका साहस और उनकी विलक्षण प्रतिभा।"[55] इन्होंने स्वतंत्र भारत के राजनेताओं से देश को जिस तरह से बेहाल देखा उसका विवरण अपनी रचनाओं के माध्यम से प्रस्तुत किया।

'इन्ही हथियारों से' राजनीतिक दृष्टिकोण से रचनाकार की महत्वपूर्ण रचना है। इस रचना में रचनाकार ने बलिया के राजनितिक आंदोलन को सामने लाते हुये समकालीन राजनीतिक समस्या पर प्रकाश डाला है। इस रचना में इन्होंने अहिंसा, सत्याग्रह, और शांतिपूर्ण प्रतिरोध के गाँधीवादी हथियारों के प्रति अपनी आस्था व्यक्त की है। यह उपन्यास 'सूखा पत्ता' की तरह न होकर राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन में बलिया वासियों के गंभीर अवदान के इतिहास को व्यक्त करता है। उपन्यास में संघर्षरत नवयुवक शुरू में गंभीर भले न दिखते हो लेकिन धीरे-धीरे समय की मांग के साथ गंभीर होते जाते हैं। अमरकांत इतिहास परक रचना में जहां भी थोड़ी बहुत छूट लेते हैं वहाँ भी उपन्यास की प्रवाहमयता में किसी भी तरह का अवरोध को नहीं आने दिया है। रचनाकार ने इतिहास परक रचना रचने के पीछे के कारण को व्यक्त करते हुये लिखा "इतिहास भूलने की चीज नहीं है। इतिहास वह दर्पण है, जिसमें हम अपनी खूबियों

और कमियों का देख सकते हैं। इनकी जानकारी हमें और ताकतवर बनाकर नये समय की नयी चुनौतियों का सामना करने की बुद्धि देती है। यहाँ का इतिहास हमारे देश के इतिहास का ही अंग है, फिर भी हमारी कुछ निजी विशेषताएँ भी हैं।[56] देश के राजनितिज्ञों के लिये यह बहुत बड़ी चुनौती है कि अपने देश के इतिहास को जाने। मध्यवर्गीय समाज का जन देश की राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इस वर्ग के साथ समस्या है अपनी निजी विशेषताओं को जानने की। पश्चिमी सभ्यता की जितनी चिन्ता इस वर्ग को होती है उसका रंचमात्र भी देश के इतिहास, गौरव को जानने की नहीं होती। जब तक हम अपने आपको नहीं जानेंगे, देश के भूत वर्तमान को नहीं जानेंगे तब तक हम अपने कर्तव्यबोध पर खरा नहीं उतर सकेंगे। इतिहास परक रचना होने के साथ समकालीन राजनीतिक परिस्थियों को भी सामने लाता है।

मध्यवर्गीय समाज का जन जानबूझ कर औपनिवेशिक चंगुल में फंसने के लिये तत्पर दिखता है। मध्यवर्गीय समाज को बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की नियति के बारे में पूरी जानकारी है। इसके बावजूद यह वर्ग खुशी-खुशी अपने आपको उनके हवाले कर रहा है। यह रचना उस समय सामने आती है जब मध्यवर्ग भूमंडलीकरण के नतीजों से वाकिफ हो गया था। रचनाकार ने इस कारण सुरंजन शास्त्री से कहलवाया है "गुलामी भयंकर अभिशाप है चिरयी-चुरंग से लेकर मनुष्य तक कोई भी गुलामी पसन्द नहीं करता। गरीब-से-गरीब मजदूर भी नमक के साथ सूखी रोटी खा लेगा, लेकिन किसी का गुलाम बनकर चिकना-चिकना भोजन पसन्द नहीं करेगा।"[57] इस रचना में आये मध्यवर्गीय पात्रों के बारे में रचनाकार ने उनकी कमियों को उन्हीं के सामने लाते हुये उनके भीतर के व्यक्तित्व को निखारा है। मध्यवर्गीय समाज के व्यक्तियों में दिखावा, प्रदर्शनप्रियता आदि का बोलबाल हर समय से रहा है। यह भावना इस वर्ग को लक्ष्यभेदी बनते समय बाधक बना है। सुरंजन शास्त्री का यह कथन समस्त मध्यवर्गीय व्यक्तियों के लिये महत्व रखता है "देखिये आधुनिक बनिये। इसका मतलब दूसरों की नकल नहीं, अपने देश की प्राचीन सड़ी-गली, अप्रसांगिक एवं बेकाम चीजों की भी नहीं। इसका अर्थ है अपने इतिहास, संस्कृति और समाज से सबक लेते हुये अपने अंदर और दूसरों में वैज्ञानिक दृीष्टकोण विकासित करना और नयी चुनौतियों का नये संकल्पों के साथ सामना करना। आप मध्यमवर्ग से आते हैं, यह सुविधावादी वर्ग है, इसका जोश-उत्साह दूध के उबाल की तरह होता है, इसलिये जनता से अपने को जोड़ने के लिये एक समाजवादी कार्यकर्ता को बाहर समाज में और अपने भीतर, दोनों जगह संघर्ष करना पड़ता है--मध्यमवर्गीय मनोवृत्तियों से भी संघर्ष।[58] यह रचना राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन को सामने लाने के साथ मध्यवर्गीय समाज के व्यक्तियों के भीतर की अतिस्वार्थपरता को भी सामने लाता है। मध्यवर्ग के भीतर समाये कथनी और करनी के अन्तर को सामने लाता है। गोपाल का गुस्सा मध्यवर्गी य समाज के दुहरे व्यक्तित्व के कारण है। उसका कहना है 'मैं तो हर पार्टी में आता-जाता हूँ। बड़ी-बड़ी ऊंची बातें करने वालों के मुह लटक जाते हैं जब मेरे हाथ से पानी पीने की मजबूरी आ जाती है। साथ में खाने-पीने के मामले में तो और भी विकट स्थिति होती है. तब ज्ञात होता है कि बहानेबाजी के तर्क प्रस्तुत करने में हमारे देश के लोग सर्वोपरि हैं।"[59] यह तथ्य उस समय की समाजगत संरचना का बयान करता है जब समस्त मध्यवर्ग देश के भीतर की कूपमंडूकता को समाज से बाहर निकालने की सोच रहा था। यह रचना राजनितिक गतिविधियों को सामने लाने के साथ समाज की कोढ़गत समस्या को सामने लाता है।

/

इनके उपन्यास साहित्य ने जहाँ आजाद देश के राजनीतक आन्दोलनों में मध्यवर्गीय समाज के लोगों की भूमिका को उकेरा है तो इनकी कहानियों ने स्वतंत्र भारत में मध्यवर्गीय समाज के लोगों की आशाओं को राजनीति ने किस तरह प्रभावित किया इसका उल्लेख किया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत की राजनीति में विशाल परिवर्तन हुये। स्वतंत्रता मिलने के बाद राजनीतिक क्षेत्र में जितने अवसरवादियों का बोलबाला होने के साथ-साथ रुतवा में इजाफा हुआ वह निरन्तर बढ़ता गया। ऐसी स्थिति में देश के जन सामान्य की क्या हालत होगी इस पर उनको सोचने का कभी ख्याल ही नहीं हुआ अपने स्वार्थों को पूरा करने में ही वे देश का उद्धार होना मानते थे, अपने से यदि जरा भी फुर्सत मिलती तो ऐसे लोग उनका कल्याण करने में जुट जाते जिनका संबंध उनसे रहता था। परिणामस्वरूप देश की शासन व्यवस्था और आर्थिक स्थिति में भयंकर गिरावट आ गयी। इस स्थिति की प्रतिक्रिया स्वरूप अमरकांत ने अपनी कहानियों में व्यंग को रखा। जिसका स्वरूप विद्रोह और विरोध का है, इन विद्रूप स्थितियों से समझौता का स्थान कहीं भी इनकी कहानियों में नहीं मिलता। 'दर्पण' कहानी में कुलदीप भारती समाज के उस पक्ष का प्रतिनिधित्व करते हैं जो जनता के बल पर चुनाव जीतते हैं तथा जनता के लिये अनेकों नेक काम करने की कसमें को खाते हैं। इस कहानी में भारती अपने स्वार्थों को पूरा करने के लिए दलबदल तथा पद यात्रा करते हैं। पदयात्रा के दौरान अपने जोशीले भाषण में जो कहते हैं उसे भूल जाते हैं। इस कारण जब एक उनका समर्थक उनके जोशीले भाषण की प्रशंसा करता है तो वह कहते हैं कि क्या कहा था मैंने मुझे तो याद नहीं। वह अपने समर्थकों के पुत्र-पुत्रियों के अयोग्य होने के बावजूद नौकरी दिलाने का आश्वासन देते हुए कहते हैं "अपने लोग हर जगह हैं, नहीं, नहीं मैं करा दूँगा... एडहाक हो जायेगा, फिर कमीशन में देख लिया जायेगा।"[60] लेकिन गरीबों को मात्र आश्वासन ही हाथ लगता है। एक बुढ़िया जब अपने लड़के को चपरासी बनवाने के लिए अनुरोध करती है तब उसको आश्वासन देने के लिये भी भारती जी ध्यान नहीं देते। ऐसे जन नायक देश के राजनीति में दादागिरी कर रहे हैं। इस स्थिति में जन सामान्य को रास्ता का मिलना कितना मुश्किल है इसका अंदाजा लगाना आसान है।

इस स्थिति के कारण अमरकान्त ने अपनी रचना में राजनीति और सामन्ती चरित्र के प्रति विद्रोह का भाव दिखाया है। इनके कथा नायक मध्यवर्गीय परिवेश के हैं। इस कारण जहाँ इनको मौका मिला अपनी झोली भरने में जरा भी संकोच नहीं करते, लेकिन उसमें भी कुछ ऐसे हैं जिनको व्यवस्था के जंगल राज से बहुत कुढ़न होता है। 'कलाप्रेमी' कहानी का सुबोध राजनीति में व्याप्त सामन्तवादी शक्तियों के प्रति अपना विद्रोह व्यक्त करते हुये कहता है "सारे संसार को रास्ता दिखाने वाले इस देश में कोई परिवर्तन क्यों नहीं होता?........ "जानते हो, सदियों से यहाँ समाज पर शासन कौन कर रहा है? बड़ी -बड़ी जातियों के सामंतवादी प्रवृत्ति वाले लोग। आज भी इन्हीं जातियों का शासन है। क्या बात है इन्हीं जातियों में ईश्वर के अवतार, धार्मिक संत, विद्वान, राजनीतिक नेता, लेखक कलाकार आदि पैदा हुये हैं? ............ इसमें से प्रत्येक अपने को एक मात्र देश भक्त घोषित करता है-एक मात्र क्रांतिकारी। इनमें से प्रत्येक शोषणहीन समाज की स्थापना का दावा करता है, जबकि चाहिये इनको कुर्सी , सत्ता-सुख और सुविधा। वर्षों से वही लोग, वही बातें, वही आदतें, वही काम...... और कभी एक गुट सत्ता में है, कभी दूसरा गुट....... ।"[61] सुबोध की यह बात राजनति करने वालों पर प्रश्न चिन्ह

लगाती है। सुबोध ने अपने कथन में यह भी स्पष्ट किया कि किस तरह से इन राजनीतिज्ञों के कारण देश की सच्ची सम्पदा खराब साबित हो रही है तथा ओछी कलायें समाज में सम्मान पा रहीं हैं। वह कहता है "जब से मैंने होश संभाला है दोनों दलों को शासन करते हुये देखा है। मूल रूप से इन दोनों में कोई अन्तर नहीं होता, बस व्यक्ति और नारे बदल जाते हैं।............ प्यारे यहाँ हर चीज के दो सत्य दिखाई देते हैं। ये दोनों सत्य उन दोनों दलों के व्यक्तिगत सत्य हैं और एक दल का सत्य आसानी से दूसरे दल का असत्य बन जाता है..... ।"[62] इन दोनों दलों के लोग जब तक सत्ता में रहते है तब तक अपने लोगों को सत्ता का सुख देने में ही अपना सौभाग्य समझते हैं। सुबोध कहता है "दोनों ही निरन्तर सत्ता और सुविधाओं के लिये एक दूसरे की निन्दा करेंगे। दोनों ही निरन्तर सत्ता और सुविधाओं के लिये जी तोड़ कोशिश करेंगे। दोनों के काम एक ही तरह के हैं। कैसे अपनी जाति और गुट के लोगों को आगे बढ़ायें। कैसे उन्हें विदेश भेजें। कैसे उन्हें सरकारी समितियों में पहुचायें। दोनों ही रद्दी कृतियों और तुच्छ, संकीर्ण गुटबाज लोगों को महान घोषित करते हैं, क्रांतिकारी विचारों की हत्या करते रहते हैं और घटिया लोगों को पुरस्कार दिलाते रहते हैं.... ।"[63] आज हमारा देश इस तरह के राजनीतिज्ञों के हाथों में है जिसके परिणामस्वरूप हमारे यहाँ की जनता का भविष्य खतरे में होने के साथ अंधकार में है। इन विषम परिस्थितियों से निकालने वाला राजनेता कहीं नजर नहीं आ रहा है।

आज के नेता बाहर से कुछ और भीतर से कुछ और हैं। बाहर से समाजवाद की दुहाई देते हैं और भीतर से अपने स्वार्थ साधन में लिप्त रहते हैं। देश की शासन व्यवस्था को ठीक रखने वाले राजनेता जब भ्रष्ट हो जाते हैं उस हालत में देश के अधिकारियों मे किस तरह भ्रष्टाचार फैलता है। स्थिति का जिक्र अमरकांत ने 'हत्यारे' कहानी में गोरे माध्यम से प्रकट किया है। गोरा प्रतीकात्मक रूप में कहता है "नेहरू देश के सभी नेताओं को निकम्मा और बातूनी समझता है।" तथा "नेहरू मेरा हाथ पकड़कर रोने लगा। बोला आज देश भारी संकट से गुजर रहा है। सभी नेता और मंत्री बेईमान और संकीर्ण विचारों के हैं। जो ईमानदार हैं उनके पास अपना दिमाग नहीं है। मेरी लीडरशीप भी कमजोर हो गयी है मेरे अफसर मुझको धोखा देते हैं। जनता की भलाई के लिए मैंने पाँचशाला योजनायें शुरू की थी लेकिन ब्लाकों के सरकारी कर्मचारी अपने घरों में लगे हैं। मैं जानता हूँ कि सारे देश में कुछ लोग लूट खसोट मचाये हुये हैं लेकिन मैं उनके खिलाफ कोई कार्यवाही नहीं कर सकता।"[64] यह तथ्य उस सच्चाई की तरफ इशारा करता है जिसके कारण देश में फैले भ्रष्टाचार की रोकथाम के लिये 1964 में संथानम कमेटी का गठन हुआ। उस कमेटी ने साफ तौर पर स्वीकार किया-"हमें बताया गया है कि भ्रष्टाचार इस सीमा तक बढ़ गया कि लोगों का सार्वजनिक प्रशासन में यकीन ही खत्म होने लगा है चारो ओर से हमें सुनने को मिल रहा है कि हाल के वर्षो में भ्रष्टाचार प्रशासन के उन अंगों तक फैल गया है जो पहले कभी अछूते थे पर .......इमानदारी के बेअसर हो जाने की छवि उसके वास्तविक रूप से बेअसर हो जाने की तरह नुकसान देह होती है।"[65] अमरकांत ने भी इस सच्चाई को महसूस किया था। उन्होंने कहा भी है-"नेहरू की जनतांत्रिकता, उदारता, मानवीयता का कई प्रतिक्रियावादी तत्वों ने अनुचित लाभ उठाना शुरू किया।"[66] स्पष्ट है कि भारतीय मध्यवर्गीय समाज ने आजादी की लड़ाई में भाग लेते समय स्वतंत्र भारत से जिस तरह की कामना की थी वह पूरा नहीं होता दिखता। लोगों को यह आशा थी कि आजाद देश के भारतीय नेता देश की बागडोर संभालते हैं तमाम सामाजिक विसंगतियों को दूर करेंगे, पर ऐसा कुछ नहीं हुआ। जिन लोगों ने देश की बागडोर संभाली, उन्होंने क्षुद्र स्वार्थो से पूरे राजनीतिक परिवेश

को दूषित कर दिया। चारो ओर भाई-भतीजावाद, जातिवाद, स्वार्थपरता, अनाचार, पक्षधरता तथा संकीर्णता का जाल फैला है। जिन राष्ट्रीय आदर्शों की पुनर्स्थापना के लिये युगों से प्रतीक्षा की गयी, वे सब चूर हो गये। इन स्थितियों का चित्रण करते हुये अमरकांत ने सपूत कहानी में कहा "जमाना तेजी से बदल रहा था बहुत से लोग त्याग और कुर्बानी का रास्ता छोड़ चुके थे और सुख से जीवन बिता रहे थे।"[67]

### 3. 5 मध्यवर्गीय जीवन का पारिवारिक पक्ष

अमरकांत के कथा साहित्य में मध्यवर्गीय समाज में परिवारिक संबंध के प्रारूप को हम पाते हैं। इनके उपन्यास साहित्य में जिस तरह के परिवार का चित्रण मिलता है उस तरह के परिवारिक संबंध हम इनकी कहानियों में नहीं पाते। इनकी कहानियों में परिवार आर्थिक विसंगति की मार को झेल रहे तथ्यों को उभारने वाला है। कहानियाँ परिवार के बीच की समस्या को जिस विलक्षण ढंग से सामने लाती हैं वह इनको समकालीन कथाकारों से अलग एवं विशिष्ट बनाता है।

'सूखापत्ता' में रचनाकार ने कृष्ण कुमार नामक पात्र के परिवार को मुख्य तौर पर रखा है। इस पात्र का पारिवारिक संबंध पारिवारिक उसूलों के आधार पर बना दिखाई पड़ता है। कृष्णकुमार परिवार नामक छतरी के तले अपने आपको सुरक्षित महसूस करता है। मध्यवर्गीय समाज का व्यक्ति परिवार से खींझता है टूटता है उलझता है लेकिन परिवार को कभी नहीं छोड़ता। उपन्यास का सृजन जिस स्थिति में हुआ, उस समय मध्यवर्गीय समाज का व्यक्ति देश को लूटता भी इस कारण से था जिससे वह परिवार के लिए कुछ कर सके। मध्यवर्गीय समाज की परिस्थितियाँ इस तरह से बदलीं कि लोगों को जीविका के लिये वृहद परिवार को छोड़ना पड़ा। लोग इस कारण एक शहर से दूसरे शहर की तरफ भागने को विवश होने लगे। इसके परिणाम स्वरूप लोगों में केंद्रीय परिवार की बात धीरे-धीरे कम होने लगी। इनके उपन्यासों में संयुक्त परिवार का जिक्र नहीं दिखता। कृष्णकुमार परिवार का जिक्र करते हुए कहता है "स्कूली तथा शहरी लण्ठों की बदतमिजियों से बचने के लिए मैं अधिकतर घर पर ही बना रहता और खेल कूद के नाम पर भाइयों से गाली गलौज और मारपीट कर संतोष कर लेता। स्कूल जाता घर आता और बस। मेरे आचरण के विरुद्ध किसी प्रकार का लांछन मुझे बर्दाश्त नहीं था।"[68] परिवार के जिस आचरण के विरुद्ध न जाने की बात कृष्णकुमार कहता है उसी के दबाव के कारण वह मनमोहन से संबंध विच्छेद करता है। कृष्णकुमार अपने भाई के इस तथ्य "जब तक तुम टेन्थ न पास हो जाओ। तुम्हारा उसके साथ घूमना ठीक नहीं।"[69] जिस पारिवारिक सुरक्षा की बात ऊपर कही गई है उसके तहत कृष्णकुमार अपने भाई की बात जस्टीफाई करता है। अन्तत: वह निर्णय करते हुए सोचता है "किन्तु भैया ने क्या सोचकर यह बात कही थी? संभवत: उनको ईर्ष्या हुई हो। पर यह विचार आते ही मैंने अपने आपको धिक्कारा। वह मेरे बड़े भाई हैं और मेरे भले के सिवाय और क्या चाहेंगे? तो क्या उनको मेरे आचरण पर संदेह है? यह विचार मेरे लिए असह्य था मनमोहन ने अब तक मेरे बड़े भाई की तरह व्यवहार किया था। मुझे उनसे कोई शिकायत नहीं थी। किन्तु जब भैया ऐसा चाहते हैं तो मैं ऐसा ही करूगा, मैने यह तत्काल निश्चय कर लिया।"[70] कृष्णकांत का यह निश्चय मध्यवर्गीय समाज के परिवारिक स्थितियों का परिणाम है। घर के बड़े जिस बात को कहते हैं घर के लोग उसको मानने के लिये विवश रहते हैं। उसका मन चाह कर विद्रोहात्मक नहीं हो पाता है। वह अपने वर्ग की सीमा से बाँधते हुये ही अपने आपको सुरक्षित महसूस करता है।

मध्यवर्गीय समाज के परिवारों में जब विमाता का प्रवेश हो जाता है उस समय मातृहारा बच्चे पर क्या बीतती है इसका जिक्र इन्होंने 'काले उजले दिन' में किया है। विमाता के प्रवेश के कारण पारिवारिक संबंध इस रचना में स्वस्थ्य नहीं दिखाई पड़ती। प्राय: मध्यवर्गीय समाज के बच्चों के बचपन की पारिवारिक स्थितियाँ विमाता के आगमन के साथ कटु हो जाती है। धीरे-धीरे बच्चों का बचपना सांसत में चला जाता है। वे विभिन्न तरह से सताये जाने लगते हैं। उनके माता-पिता उनके जीवन को इतना विषम बना देते हैं कि वे हर तरह से कोशिश करते हैं कि घर की स्थिति बदल जाय। स्थिति बदलती नहीं। इसके लिये मातृहारा बच्चे ज्यादा से ज्यादा काम करके स्थिति सामान्य करने की कोशिश करते हैं। इसी तरह की बात उपन्यास का कथा नायक कहता है "मैं हर समय डरा रहता था और अधिक से अधिक काम करके माता जी को प्रसन्न करने की कोशिश करता, लेकिन माता जी की असंतुष्टि दिन पर दिन बढ़ती जा रही थी। फिर मेरा आत्मविश्वास एकदम समाप्त हो गया और मुझसे गलतियाँ होने लगीं। मुझे बड़ा आश्चर्य होता था कि पिता जी क्या एक बार नहीं सोचते कि मैं उनका बड़ा बेटा होकर भी नौकर की तरह रहता हूँ।"[71] बचपन में कथानायक जिन विषम पारिवारिक परिस्थितियों को झेलता है उसका असर उसके सम्पूर्ण जीवन पर पड़ता है वह बचपन में जिस हीनता बोध का शिकार होता है वह कथानायक को असुरक्षित बेसहारेपन की भावना का शिकार एवं निहायत लाचार बना देता है। यह स्थिति मध्यवर्गीय समाज में आसानी से देखने को मिल जाता है। इस दुरूह सामाजिक अव्यवस्था का शिकार जिस तरह से मध्यवर्गीय समाज के बच्चें हैं उस तरह से समाज के न ही निम्नवर्ग के बच्चे हैं और न तो के उच्चवर्ग के बच्चे। निम्नवर्ग के बच्चों के प्रति बचपन में की जा रही लापरवाही उनको स्वयं निर्मित होने के लिये मजबूर करता है। उनको इस बात की जरूरत ही नहीं रहती कि उनकी देखभाल के लिये विमाता का व्यवहार कैसा है। उच्चवर्ग की स्थिति मध्यवर्गीय समाज से अलग किस्म की है।

अमरकांत ने मध्यवर्गीय समाज की सभी तरह की पारिवारिक स्थितियों को रचना के माध्यम से दिखाया है। स्वतंत्रता मिलने के बाद भी कुछ ऐसे मध्यवर्गीय सामन्तों का परिवार था जो झूठी मान-मर्यादायों, झूठे दिखावेपन, गैर जिम्मेदरानापन तथा असामाजिक होकर अपने पूरे परिवार को तबाह करता था। ऐसे लोग निहायत स्वार्थी होते हैं। उनका स्वार्थ उनके तक ही सीमित रहता है। इस तरह के परिवार को इन्होंने 'आकाश पक्षी' में रखा है। हेमा का परिवार भारतीय समाज के उन सामन्तों का है जो आजादी मिलने तथा रियासतों के विलिनीकरण के उपरान्त अपने आपको सरकार मानता था तथा बहुत से क्रिया-कलाप राजाओं जैसा करता था। बड़े साहब 'हेमा' के पिता एवं हेमा के घर संरक्षक की भूमिका में हैं पूरे परिवार में वही सबसे ज्यादा अपनी जिम्मेदारियों से भागने वाले हैं। बड़े सरकार मानने को तो यह मानते थे कि "जैसा जमाना आए वैसा करना चाहिए। अब तो ठाकुर लोगों का जमाना गया ....... अब बनिया का जमाना आ गया है। अब हमें भी बनिया बनाना पड़ेगा। जो इस जमाने में बनियागीरी नहीं करेगा, वह पैसे-पैसे के लिए मुहताज रहेगा..... ।"[72] जैसा उल्लेख किया गया है कि बड़े सरकार इस तरह की बातों को करने के बावजूद किसी सार्थक काम को नहीं करते। उनकी लफ्फबाजी निरन्तर बढ़ती गयी। इसके साथ हेमा की माँ भी अपनी खोखली श्रेष्ठता के प्रदर्शन में पीछे नहीं रहती। उनका मानना है "दूसरे की मदद स्वीकार करने से उसका एहसान का बदला या तो जल्दी ही चुका दिया जाता

है या उसके अस्तित्व को अस्वीकार कर दिया जाता है, उसको झुठला दिया जाता है।"[73] इस तरह के पारिवारिक वातावरण में रह रही हेमा जैसे वच्चे का मन किसी स्वाभाविक विकास को नहीं प्राप्त कर सकता। समाज में ऐसे लोग जिनका न तो कुछ सामाजिक आधार है और न ही उनको किसी तरह के जिम्मेदाररी से मतलब रहता है ऐसे लोग अपने स्वार्थ के लिये अपने परिवार को किस रसातल में पहुचायेंगे इसका अंदाजा लागाना बहुत मुश्किल है। ऐसे अपने व्यक्तिगत सुख-सुविधाओं के खातिर वही काम कर सकते है। जिस क़ाम को वड़े सरकार हेमा के साथ कर सकते हैं अर्थात हेमा को जिस तरह से बेचा गया वह ऐसे लोगों के लिये किसी भी प्रकार की अनहोनी घटना नहीं लगती। इस तरह के लोग समाज के लिये कोढ़ हैं।

समाज के ऐसे लोग जिसका मतलब किसी जिम्मेदारी से नहीं होता उनकी पारिवारिक स्थिति बड़ी अव्यवस्थित होती है रचनाकार ने 'परायी डाल का पक्षी' में इस तरह की परिवारिक समस्या को उठाया है। इसमें दीपक ऐसे चरित्र का व्यक्ति है जो परिवार की स्थितियों से परिचित होना ही नहीं चाहता था। उसको स्वसुख की चिन्ता निरन्तर सताती रहती थी। दीपक मध्यवर्गीय समाज के प्राय: व्यक्तियों की तरह है जो घर की किसी जिम्मेदारी को उठाना नहीं चाहता। ऐसे लोग अपनी जिम्मेदारी को आसानी से दूसरे के ऊपर थोप देते हैं। दीपक घर की स्थिति का चित्रण करते हुये कहता है "उसका घर कैसा बेढंगा सा दिखता है? एक तो ढंग से सामान नही हैं। फिर वे सामान ऊल-जलूल तरीके से जहाँ-तहाँ ठूसे हुये थे। उसने अपने बच्चों की ओर देखा, जो पास में बैठे खा रहे थे। उनके मुँह और कपड़े कितने गंदे हैं। उसको उनके खाने का तरीका कितना असभ्यता पूर्वक लगा। उसने पत्नी की ओर देखा जो रसोई में बैठी सिर नीचा करके चूल्हा फूँक रही थी।"[74] यह चित्रण अहिल्या के परिवार का है जहाँ दीपक हर समय इस फिराक में रहता है कि किस तरह से वह परिवार को न्यूनतम सुविधाओं को देकर अपने पास ज्यादा से ज्यादा सुविधाओं को रख सके। दीपक के कारण अहिल्या अपने परिवार में जूझती है। उसका परिवार इस तरह का है जहाँ न तो दीपक के अलावा घर में कोई सहायता करने वाला है। इस स्थिति में यह मात्र अहिल्या की जिम्मेदारी नहीं थी कि अपने बच्चों को लेकर अकेले झेले। जहाँ अहिल्या इस बात को लेकर चिन्तित रहती है कि यदि उसके बच्चों को कुछ हो जाय तो वह किसके पास जायेगी। वहीं दीपक को इस बात से कुछ लेना देना ही नहीं रहता। दीपक से वह इस कारण वार-वार कहती है कि वह दफ्तर से जल्दी चला आया करे क्योंकि उसके परिवार में होने से खाना वनाने में बड़ी सुविधा होती है। वह दीपक के देर से आने के कारणों पर ध्यान देते हुये कहती है "जब से वह अपने पति के साथ रहने लगी थी- तरसती रह गई थी कि दीपक किसी दिन दफ्तर से जल्दी चला आता। उसने कई बार टोका था कि पांच बजे दफ्तर बंद होता है तो वह साढ़े पांच बजे तक दोस्तों के साथ गप-सड़ाका करे और छ: बजे तक घर जरूर पहुँच जाए। परदेश की वात है, साथ में छोटे-छोटे वच्चे हैं, समय असमय को कोई नहीं जानता, अगर किसी को कुछ हो हवा गया तो वह किसके पास दौड़ी जायेगी? घर आने के वाद जहाँ चाहे जाए, वह मना नहीं करेगी।"[75] अहिल्या का यह दर्द मध्यवर्गी समाज में रह रही अनेकों महिलाओं की है। दीपक जैसा पात्र भारतीय समाज की बहुत सारी महिलाओं को भावनात्मक तरीके से ठगता है। उसका शोषण करता रहता है। भारतीय समाज में रह रही बहुत सी महिलायें यह चाहती हैं कि उनका परिवार व्यक्तिगत हो। उनके परिवार में कोई भी हस्तक्षेप करने वाला न हो लेकिन परिवार के सुव्यवस्थित होने का यह तरीका तभी संभव हो सकेगा जव

घर का मुखिया जिम्मेदारी से अपनी जिम्मेदारियों को उठाये एवं उसकी समझ में यह बात आये कि परिवार के प्रति उसकी भी कुछ जिम्मेदारी है। रचनाकार ने रचना में निर्मला द्वारा व्यक्तिगत परिवार के ठीक ढंग से होने के आधार को स्पष्ट करते हुये कहलवाया है "मैं तो लाला जी इतना जानती हूँ कि स्त्री वह सबकुछ बन सकती है, जो मर्द चाहता है, लेकिन शर्त यह है कि मर्द उसके साथ प्रेम और सहानुभूति का व्यवहार करे। जो सीख वह स्त्री को देना चाहता है वह खुद उस पर चले।"[76] वह यह भी कहती है कि यदि परिवार व्यक्तिगत है तब पति भी घर की जिम्मेदारियों को उठाये। घर के काम-धाम को केवल पत्नी को ही न सौप दे। दीपक ऐसा नहीं करता इस कारण अहिल्या का पारिवारिक जीवन नारकीय बन जाता है। दीपक के पास अहिल्या जब सारे काम-धाम करके आती और उससे अपने शरीर का कष्ट प्रकट करती तो दीपक अपनी दूसरी बड़ी काल्पनिक तकलीफ प्रकट करता था। रचनाकार इस बात को स्पष्ट करते हुये कहता है "अहिल्या चारपायी पर आते ही अपने शरीर के कष्ट की बात कहती थी। एक तो सचमुच वह काम करते-करते थक जाती थी। फिर इतना करके वह पति के प्यार और सहानुभूति के लिए आतुर हो उठती थी। यह सब कहकर उसके मन में सन्तोष भी होता था। आखिर वह अपने सुख-दुख की बात की बात किससे कहे? परन्तु उसके कष्ट की बात पर ध्यान नहीं देता था। इसका अर्थ होता उसके प्रति सहानुभूति प्रकट करना, कर्तव्यपूर्ण यथार्थ को मंजूर करना, जिससे वह दूर भागता था। वह अहिल्या के दु:ख के महत्व को कम करने के लिए अपने किसी काल्पनिक दु:ख की बात छोड़ देता।"[77] यह तथ्य जब तक मध्यवर्गीय समाज में रहेगा तब तक परिवार का वह अर्थ नहीं स्थापित हो पायेगा जो होना चाहिये।

अमरकांत ने अपनी कहानियों में समाज के निम्न मध्यवर्गीय परिवार को अपनी कहानी का हिस्सा बनाया है। इनके यहाँ परिवार के दो रूप मिलते हैं। एक जहाँ परिवार अत्यंत बेचारगी की हालत में रहता है। ऐसी स्थिति में परिवार की सबसे जिम्मेदार महिला परिवार के होने के मतलब को बड़ी मजबूती से बनाये रखने की जद्दोजहद में जुटी दिखाई पड़ती है। इस तरह की इनकी कहानी है 'दोपहर का भोजन' इस कहानी में दोपहर के भोजन से बड़ी समस्या है परिवार के बीच आपसी संबंध को बचाये रखने की। सिद्धेश्वरी का सबसे बड़ा दर्द इस विषम समय में रिश्तों को बचाये रखने की है। उसकी हालत खाना परोसते समय खराब नहीं होती। उसके लिये उलझन उस समय बढ़ जाती है जब एक दूसरे को जोड़ने की कोशिश करती है। रामचन्द्र जब उससे मोहन के बारे में पूछता है उस समय उसके मन में सच बोलने की हिम्मत नहीं हुई उससे यह नहीं कहा गया कि उसको नहीं पता कि मोहन कहाँ गया है वह उस समय झूठ बोल जाती है "किसी लड़के के यहाँ पढ़ने गया है, आता ही होगा दिमाग उसका बड़ा तेज है और उसकी तबीयत चौबीस घंटे पढ़ने में ही लगी रहती है हमेशा उसी की बात करता रहता है।"[78] भाइयों के बीच संबंध ठीक से बना रहे इस कारण जब मोहन घर में खाने आता है उस समय इसी तरह की बात उससे भी कहती है "बड़का तुम्हारी बड़ी तारीफ कर रहा था। कह रहा था, मोहन बड़ा दिमागी होगा, उसकी तबीयत चौबीसों घंटे पढ़ने में ही लगी रहती है।' यह कहकर उसने मझले लड़के की ओर इस तरह देखा, जैसे उसने कोई चोरी की हो।"[79] मुंशी जी के सामने वह उसी अस्त्र का प्रयोग करती है जिसका वह बड़े तथा मझले लड़के के लिये किया था। मुंशी जी जब उससे कहते हैं कि बड़का नहीं दिखाई दे रहा है उस समय मौका पाकर सिद्धेश्वरी कहती है "अभी-अभी खाकर काम पर गया है। कह रहा था, कुछ दिनों में नौकरी लग जाएगी। हमेशा, 'बाबूजी, बाबूजी' किये रहता है। बोला

बाबूजी देवता के समान हैं।"[80] परिवार की एकता बरकार रखने के लिये जद्दोजहद करती हुयी सिद्वेश्वरी सबसे बड़ी समस्या में फंसी हुई दिखती है। उसने परिवार को एक सूत्र में पिरोने के लिये मुंशी जी जब बड़े लड़के को पागल कहते हैं उस समय वह मौका पा जाती है। परिवार के लिये झूठ बोलते हुये वह कहती है "पागल नहीं है, बड़ा होशियार है। उस जमाने का कोई महात्मा है। मोहन तो उसकी बड़ी इज्जत करता है। आज कह रहा था कि भैया की शहर में बड़ी इज्जत है, पढ़ने-लिखने वालों में बड़ा आदर होता है और बड़का तो छोटे भाईयों पर जान देता है। दुनिया में वह सब कुछ सह सकता है, पर यह नहीं देख सकता कि उसके प्रमोद को कुछ हो जाये।"[81] सिद्धेश्वरी की यह होशियारी है कि निम्न मध्यवर्गीय समाज में संकट के समय परिवार को एक सूत्र में बाँधती है। इस कारण वह कभी बड़े लडके की तो कभी छोटे लड़के की तारीफ करती है। रचना के माध्यम से रचनाकार ने निम्न मध्यवर्गीय समाज की सबसे जिम्मेदार स्त्रियों की दुर्दशा पर प्रकाश डालते बाजारवादी व्यवस्था की क्रूरता में स्त्रियाँ परिवार को संभालने में किस तरह से पिस रहीं हैं को सामने रखा है।

उस परिवार को भी इन्होंने अपनी कहानियों में रखा है जिसमें घर की महिला पति की आवारागर्दी पर पति को डाटती है। इनके उपन्यासों की महिला पात्र जिस तरह से पति नामक जीव से हर समय संकोच करती हुई दिखाई पड़ती हैं उनके द्वारा किये गये किसी भी अत्याचार को चुप-चाप सहने में ही अपनी भलाई समझते हुये अपने परिवार को दुर्दशा की हालत में पहुँचा देती हैं, वहीं 'शाम' कहानी की लता महेन्द्र के गैर जिम्मेदराना व्यवहार से ऊब जाती है वह अपने पति महेन्द्र के इस व्यवहार से इस कारण ऊब जाती है क्योंकि उसके इस तरह के व्यवहार करने सें परिवार की संवेदना खत्म हो रही थी। जब महेन्द्र पारिवारिक जिम्मेदारियां से बिल्कुल विमुख हो जाता है उस समय लता उससे कहती है "यहाँ तो महीना खत्म होने के पहले ही राशन खत्म हो जाता है। आप तो दोस्तों के बीच गप्पे लगाते हैं और मुझे मुहल्ले भर में माँग-माँग कर बच्चों का पेट पालना पड़ता है। सबके सामने एक भगौना आटा और एक छटाँक चावल के लिये गिड़गिडाती हूँ और दूसरों की फुसफुसाहट और आनी-बानी बर्दास्त करती हूँ। खुद उपास करती हूँ, पर सबके सामने दो रोटी रखने की कोशिश करती हूँ।"[82] लता अपने पति को पति न मानकर साथी मानती। आज के जमाने में परिवार को चलाने का यह बहुत बड़ा तथा ठीक आधार है। इसी कारण वह उसकी कमियों को सामने रखने में जरा भी नहीं हिचकती। इनके उपन्यासों की महिला पात्रों की भाँति लता पति के सारे अवगुणों को जानते हुये अपना मुह बंद नहीं करती। वह समय की नजाकत को पहचानती है तथा उसके आधार पर चाहती है कि उसका परिवार चले। वह अपने पति से उसके निकम्मेपन को लेकर लड़ती है, झगड़ती है उसकी बातों का उचित विरोध करती है। उसके द्वारा किये गये कृत्यों को देखकर यह लगता है मानों वह मध्यवर्गीय समाज के परिवारों में सही दिशा देना चाहती हो। महेन्द्र उसको दिये गये खाने को एहसान के रूप में जताना चाहता है तथा उससे कहता है "एहसान को घोलकर इस तरह न पीओ।"[83] इसके जबाब में वह जो बात कहती है, वह महिला समाज को अपने परिवार में अपनी अस्मिता की पहचान कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

इनके कहानियों की महिलापात्र अपने पतियों को उनके कर्तव्यबोध से परिचित करवाती हैं। अहिल्या अपने पति से किसी संकोच को नहीं करते हुये कहती है "आप काम और परिश्रम से डरते है। आप पहले ही सोच लेते हैं कि आपको सफलता नहीं मिलेगी, इसलिए आप कोई नया काम हाथ में नहीं लेते और न आप अपनी बुद्धि का इस्तेमाल करते हैं। आज का जमाना मेहनत का जमाना है, जो मेहनत

करेगा, वह सुख भोगेगा। लोग दफ्तर में ही काम नहीं करते, बल्कि दो-दो तीन-तीन काम और करते हैं।" इसके बाद वह उसके जिद के स्वीकारने पर कहती है "आप लापरवाह और घमंडी भी हैं। आपको इससे मतलब नहीं कि आपके बाल-बच्चे किस तरह रहते हैं। आपको गरीबी से, दुख से सन्तोष है। संतोष इसलिये कि आप कुछ करना नहीं चाहते।"[84] इस तरह से अमरकांत ने अपने कथा साहित्य के माध्यम से यह दिखाना चाहा है कि किस तरह से मध्यवर्गीय समाज में परिवार अपने पुराने आदर्श को खत्म कर रहा था। इस स्थिति में समाज के कुछ परिवार ऐसे हैं जो आज भी अपनी पुरानी मान्यताओं से चिपके हुये हैं। जिन परिवारों में यह स्थिति है वहाँ पारिवारिक सौहार्द्र खतरे में दिखता है। अतः इस समाज को चाहिये कि समय के नजाकत को पहचानते हुये परिवार की हालत को सुधारें क्योंकि इस पर देश का भविष्य टिका हुआ है।

## 3.6 निष्कर्ष

अमरकांत के कथा साहित्य में मध्यवर्गीय समाज का फलक बहुत विस्तृत है। वह लेखक के परिवेश से गहरे रूप में जुड़ा हुआ है। अमरकांत स्वयं मध्यवर्गीय समाज से थे इस कारण इन्होंने अपने कथा साहिय मे इस समाज के उसी सच्चाई को रखा जिसको इन्होंने भोगा है। इनका भोगा हुआ यथार्थ पूरी संवेदना के साथ उस समाज की सशक्त अभिव्यक्ति है। अमरकांत जनता की किसी भी समस्या को नगण्य नहीं समझते। इन्होंने इस समाज की किसी भी समस्या को कम तथा छोटा नहीं समझते। इन्होंने मध्यवर्गीय समाज की किसी भी समस्या को अछूता नहीं छोड़ा। अमरकांत अपनी इसी विशेषता के कारण समकालीन रचनाकारों से अलग तथा महत्वपूर्ण हो सके हैं। उनके कथा साहित्य में सामाजिक बदलाव के प्रति व्याकुलता दिखाई पड़ती है। इस तरह से प्रगतिशील जीवन दृष्टि के प्रति आस्था स्पष्ट हो जाती है।

## संदर्भ

1 सूखापत्ता, अमरकांत, पृ0 102, राजकमल पेपरबैक्स प्रकाशन लिमिटेड नयी दिल्ली, प्र0 वर्ष 1984
2 यथोपरि, पृ0 174
3 सुन्नर पांडेय की पतोह, अमरकांत, पृ0 44, राजकमल प्रकाशन प्रा0 लि0 नयी दिल्ली, प्र0 वर्ष 2005
4 आकाश पक्षी, अमरकांत, पृ0 9, राजकमल प्रकाशन नयी दिल्ली, प्र0 वर्ष 2007
5 यथोपरि, पृष्ठ 142
6 यथोपरि, पृष्ठ 145
7 काले उजले दिन, अमरकांत, पृ0 64, राजकमल प्रकाशन नयी दिल्ली, प्र0 वर्ष 2003
8 परायी डाल का पक्षी, अमरकांत, पृ0 22, हिन्द पॉकेट बुक्स प्रा0 लि0 दिल्ली, प्र0 वर्ष 1965
9 काले उजले दिन, अमरकांत, पृ0 54, राजकमल प्रकाशन नयी दिल्ली, प्र0 वर्ष 2003
10 आकाश पक्षी, अमरकांत, पृ0 199-200, राजकमल प्रकाशन नयी दिल्ली, प्र0 वर्ष 2007
11 परायी डाल का पक्षी, अमरकांत, पृ0 7, हिन्द पॉकेट बुक्स प्रा0 लि0 दिल्ली, प्र0 वर्ष 1965
12 लड़का लड़की, अमरकांत, अमरकांत की सम्पूर्ण कहानियाँ, भाग 2, पृ0 70, प्रकाशक अमर कृतित्व करेली इलाहाबाद, प्र0 वर्ष 1997
13 शाम,अमरकांत की सम्पूर्ण कहानियाँ, अमरकांत, भाग 1, पृ0 272, प्रकाशक अमर कृतित्व करेली इलाहाबाद, प्र0 वर्ष 1997
14 यथोपरि, पृष्ठ 270
15 यथोपरि
16 यथोपरि
17 परायी डाल का पक्षी, अमरकांत, पृ030, हिन्द पॉकेट बुक्स प्रा0 लि0 दिल्ली, प्र0 वर्ष 1965
18 यथोपरि, पृष्ठ 32
19 मछुआ, अमरकांत की सम्पूर्ण कहानियाँ, अमरकांत, भाग 1, पृ0 285, प्रकाशक अमर कृतित्व करेली इलाहाबाद, प्र0 वर्ष 1997
20 प्रिय मेहमान,अमरकांत की सम्पूर्ण कहानियाँ, भाग 2, पृ0 63, प्रकाशक अमर कृतित्व करेली इलाहाबाद, प्र0 वर्ष 1997
21 सूखापत्ता, अमरकांत, पृ0 173, राजकमल पेपरबैक्स प्रकाशन लिमिटेड नयी दिल्ली, प्र0 वर्ष 1984
22 आकाश पक्षी, अमरकांत, पृ09, राजकमल प्रकाशन नयी दिल्ली, प्र0 वर्ष 2007
23 यथोपरि, पृष्ठ 200
24 यथोपरि, पृष्ठ 200
25 यथोपरि, पृष्ठ 201
26 यथोपरि, पृष्ठ 203
27 यथोपरि, पृष्ठ 207
28 यथोपरि, पृष्ठ 207
29 यथोपरि, पृष्ठ 215
30 सुन्नर पांडे की पतोह, अमरकांत, पृष्ठ 38, राजकमल प्रकाशन नयी दिल्ली, प्र0 वर्ष 2005

31 यथोपरि, पृष्ठ 38
32 यथोपरि, पृष्ठ 51
33 सूखापत्ता, अमरकांत, पृ0 11, राजकमल पेपरबैक्स प्रकाशन लिमिटेड नयी दिल्ल,ी प्र0 वर्ष 1984
34 यथोपरि, पृष्ठ 202
35 यथोपरि, पृष्ठ 201
36 काले उजले दिन, अमरकांत, पृ0 11, राजकमल प्रकाशन नयी दिल्ली, प्र0 वर्ष 2003
37 यथोपरि, पृष्ठ 34
38 यथोपरि, पृष्ठ 26
39 यथोपरि
40 यथोपरि, पृष्ठ 31
41 यथोपरि
42 यथोपरि, पृष्ठ 33
43 यथोपरि
44 आकाश पक्षी, अमरकांत, पृष्ठ 16, राजकमल प्रकाशन, प्र0 वर्ष 2003
45 यथोपरि, पृष्ठ 65
46 यथोपरि, पृष्ठ 67
47 यथोपरि, पृष्ठ 208
48 यथोपरि
49 परायी डाल का पक्षी, अमरकांत, पृ0 9, हिन्द पॉकेट बुक्स प्रा0 लि0 दिल्ली, प्र0 वर्ष 1965
50 यथोपरि, पृष्ठ 11
51 यथोपरि
52 दोपहर का भोजन, अमरकांत, अमरकांत की सम्पूर्ण कहानियाँ, भाग 1, पृ0 49, प्रकाशक अमर कृतित्व करेली इलाहाबाद, प्र0 वर्ष 1997
53 यथोपरि, डिप्टी कलक्टरी, पृष्ठ 84
54 आकाश पक्षी, अमरकांत, पृष्ठ 198, राजकमल प्रकाशन, प्र0 वर्ष 2003
55 अमरकांत की सम्पूर्ण कहानियाँ भाग-1, अमरकांत, पृ0 (132), प्र0 अमर कृतित्व, 1998
56 इन्हीं हथियारों से, अमरकांत, पृष्ठ 7 (भूमिका), राजकमल प्रकाशन, प्र0 वर्ष 2003
57 यथोपरि, पृष्ठ 9
58 यथोपरि, पृष्ठ 79
59 यथोपरि, पृष्ठ 84
60 यथोपरि
61 यथोपरि, दर्पण, पृ0 70
62 कलाप्रेमी, अमरकांत, अमरकांत की सम्पूर्ण कहानियाँ, भाग 2, पृ0 51, प्रकाशक अमर कृतित्व करेली इलाहाबाद, प्र0 वर्ष 1997
63 यथोपरि, पृष्ठ 52
64 यथोपरि

65 यथोपरि, हत्यारे, पृ0 182
66 यथोपरि
67 भारत सरकार, गृहमंत्रालय रिपोर्ट ऑव द कमेटी आन प्रिवेंशन करप्सन (नयी दिल्ली),पृ0 12-13, 1964
68 यथोपरि, सपूत, पृष्ठ 263
69 सूखापत्ता, अमरकांत, पृ0 15, राजकमल पेपरबैक्स प्रकाशन लिमिटेड नयी दिल्ली, प्र0 वर्ष 1984
70 यथोपरि, पृष्ठ 10
71 यथोपरि, पृष्ठ 18
72 काले उजले दिन, अमरकान्त पृ0 11 राजकमल प्रकाशन, प्र0 वर्ष 2003
73 आकाश पक्षी, अमरकांत, पृष्ठ 16, राजकमल प्रकाशन, प्र0 वर्ष 2003
74 यथोपरि, पृष्ठ 65
75 यथोपरि, पृष्ठ 183
76 यथोपरि, पृष्ठ 69
77 पराई डाल का पक्षी, अमरकांत, पृष्ठ 22, हिन्द पाकेट बुक्स, प्रकाशन वर्ष 1965
78 यथोपरि, पृष्ठ 5
79 यथोपरि, पृष्ठ 32
80 यथोपरि, पृष्ठ 20
81 दोपहर का भोजन, अमरकांत, अमरकांत की सम्पूर्ण कहानियाँ, भाग 1, पृ0 49, प्रकाशक अमर कृतित्व करेली इलाहाबाद, प्र0 वर्ष 1997
82 यथोपरि, पृष्ठ 50
83 यथोपरि, पृष्ठ 51
81 यथोपरि
82 शाम, अमरकांत,अमरकांत की सम्पूर्ण कहानियाँ, भाग 1, पृ0 272, प्रकाशक अमर कृतित्व करेली इलाहाबाद, प्र0 वर्ष 1997
83 यथापरि, पष्ठ 272
84 यथोपरि, पृष्ठ 270
85 यथोपरि
86 यथोपरि